~~474~~
455

HEADQUARTERS
Library
Department
of the Army
Washington, D.C.

21B/H/H/13/1

हल्दी घाटी

मनहर चौहान

उमेश प्रकाशन
५ नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

HALDI GHATI

(Novel for Juveniles)

by

Mannar Chauhan

Rs. 4.50

© उमेश प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक

उमेश प्रकाशन,

५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

मुद्रक

हरिहर प्रेस,

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

संस्करण

1974

□□□

अगर आप सोचते हैं कि बच्चों के अच्छे उपन्यास हिन्दी में नहीं हैं, तो निश्चय ही आपको हमारी किशोरों के लिए उपयोगी पुस्तकें पढ़ने या देखने का अवसर नहीं मिला है। एक-दो या चार-दस नहीं, बल्कि ८० से भी ज्यादा किशोर-उपन्यास हम प्रकाशित कर चुके हैं, आगे और प्रकाशित करने जा रहे हैं। विषय भी हमने अनेक चुने हैं। ऐतिहासिक नायक-नायिकाएं, 'अरब की रातों' के राजा-रानी, ज्ञान-विज्ञान का अनोखापन, रामायण और महाभारत के पात्र, राष्ट्र और विभिन्न धर्मों के नायक, शिकार की रोमांचकारी घटनाएं, प्रख्यात साहित्यकारों का जीवन और शेक्सपियर के नाटकों के रूपान्तर—कोई भी तो विषय ऐसा नहीं, जिसकी जानकारी निहायत दिलचस्प उपन्यासों के माध्यम से न दी गई हो। बच्चे तो बच्चे, बच्चों के माता-पिता भी अगर इन्हें ले बैठें तो पढ़ते ही रह जाएं।

कहने को तो ये किशोर-उपन्यास हैं किन्तु नवसाक्षरों तथा अहिन्दी-भाषी पाठकों के लिए भी ये समान रूप से उपयोगी हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में महाराणा प्रताप के मुगलों के साथ हुए संघर्ष की शौर्यपूर्ण कहनी है।

○

राष्ट्र के नए नागरिकों का निर्माण—यही है हमारा उद्देश्य।

बहुचर्चित एवं प्रशंसित

किशोर-उपन्यास-माला के पुष्प

(सचित्र, सरस तथा स-उद्देश्य)

वीर रस से पूर्ण

कर्ण	अर्जुन
श्रीकृष्ण	भीष्म
हल्दी घाटी	अभिमन्यु
खूब लड़ी मर्दानी	वीर कुंवरसिंह
गुरु गोबिन्द सिंह	सम्राट् शिलादित्य
राम का अश्वमेघ	इन्द्र की पराजय
चित्तौड़गढ़ की रानी	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
वीरांगना चैन्नम्मा	महाबली छत्रसाल
गढ़मण्डल की रानी	बाजीराव पेशवा
महाबली इन्द्र	चन्द्रगुप्त मौर्य
सम्राट् अशोक	वीर कुणाल
जय भवानी	तांत्या टोपे
दुर्गादास	उदयन

अन्य महापुरुषों पर आधारित

महाकवि कालिदास	गुदड़ी का लाल : लालबहादुर
शान्ति–दूत नेहरू	मदुरा की मीनाक्षी
ऋषि का शाप	देवता हार गए
स्वामी दयानन्द	आचार्य चाणक्य
गुरु नानक देव	मीरां बावरी
गुरु अंगद देव	संत कबीर
गुरु अमरदास	रवि बाबू
गौतम बुद्ध	विश्वामित्र

रेखाओं का जादूगर

बापू

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

तूफान | हैमलेट | भूल पर भूल
मैकबेथ | राजा लियर | रोमियो जूलियट
जूलियस सीज़र | राई से पहाड़ | वेनिस का सौदागर
ऑथेलो | निराशा | जैसा तुम चाहो

शिकार, ज्ञान-विज्ञान, 'अरेबियन नाइट्स' आदि पर आधारित

मगरमच्छ का शिकार | पूपू | दरियावर द्वीप की शहजादी
दैत्याकार पक्षी का शिकार | काने योगी | अलीबाबा : चालीसचोर
रूपा और लल्ली | बाघ का शिकार | उड़ने वाला घोड़ा
ह्वेल का शिकार | हाथी का शिकार | अरब के मसखरे

साहसिक कहानियां

रंग बिरंगी परियां
हमारे बहादुर जवान
हमारे बहादुर हवाबाज़
क्रान्ति की कहानियां
सदाचार की कहानियां
विश्व की साहसिक गाथाएं
देश-देश की परियां भारत आईं
भारत के साहसी वीरों की गाथाएं
शिकार की रोमांचकारी सच्ची गाथाएं
साहस-रोमांच की सच्ची कहानियां
साहसी समुद्री वीरों की सच्ची गाथाएं
आदमखोर पशुओं की सच्ची गाथाएं
नेफ़ा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएं

उमेश प्रकाशन
५ नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

लेखक की अन्य किशोरोपयोगी पुस्तकें

- खूब लड़ी मर्दानी
- जय भवानी
- पूपू
- रूपा और लल्ली
- हाथी का शिकार
- रंग बिरंगी परियां
- देश-देश की परियां भारत आईं

१

खून की सौगन्ध

"कुंवर जगमल कहां हैं ?" राजपुरोहित ने चारों ओर देखा लेकिन जगमल का कहीं पता नहीं था।

"कितनी बुरी बात है ! कम से कम इस समय तो उन्हें उपस्थित होना चाहिए।" वहां खड़े सामन्तों में से एक ने कहा, "कुंवर शक्तिसिंह भी तो अभी तक नहीं आए।"

तय यह किया गया कि थोड़ी देर और इन्तजार किया जाए। अगर कुंवर जगमल आ जाएं तो ठीक, वरना कुंवर प्रतापसिंह की आज्ञा से स्वर्गीय राणा उदयसिंह के शव में आग लगाई जाए।

उन दिनों मेवाड़ राज्य की ऐसी ही परम्परा थी। राजा की मृत्यु होते ही उसके उत्तराधिकारी को राजा मान लिया जाता।

और जब तक यह नया राजा अनुमति न देता, पुराने राजा का शव न जलाया जाता।

आमतौर पर सबसे बड़ा बेटा ही राजा का उत्तराधिकारी होता है, लेकिन राजा की इच्छा हो तो उसका यह अधिकार छीन सकता था। इस बार यही हुआ था। राणा उदयसिंह के सबसे बड़े बेटे कुंवर प्रतापसिंह थे, लेकिन उदयसिंह ने उन्हें उत्तराधिकारी नहीं बनाया था। उत्तराधिकारी बनाया गया था कुंवर जगमल, जो कुंवर प्रताप के बाद सबसे बड़ा राजकुमार था।

उदयसिंह ने ऐसा क्यों किया ? क्या कुंवर प्रताप से कोई अपराध हो गया था ? नहीं। बल्कि सचाई ठीक विपरीत थी। प्रताप में जो गुण थे उनका जगमल में नामोनिशान भी नहीं था। उसने पिता के अन्तिम संस्कार में भी समय रहते सम्मिलित होना आवश्यक न समझा था। यही हाल उसके दूसरे भाइयों शक्तिसिंह आदि का भी था।

जगमल की मां ही राणा उदयसिंह की सबसे प्रिय रानी थी। उसी के कहने में आकर राणा प्रताप जैसे योग्य राजकुमार से गद्दी छीनने की भूल की थी। राजपूतों के महान् नेता राणा सांगा की मृत्यु के बाद ऐसा कोई वीर नहीं बचा था जो मुगलों से सफलतापूर्वक टक्कर ले सकता। उदयसिंह में भी वे गुण नहीं थे। उसने अपने दिन केवल ऐशोआराम में गुजारे थे।

"कुंवरजी," पुरोहित ने प्रताप की ओर देखा, "मुहूर्त बीत रहा है। लगता है, कुंवर जगमल अब नहीं आएंगे। जैसी ईश्वर की इच्छा। आप आज्ञा दीजिए ताकि चिता जलाई जाए।"

सामन्तों ने भी एक स्वर से इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

"परन्तु यह अधिकार तो राणा का है। मेरे पिता ने कुंवर जगमल को राणा बनाया है। मैं अग्निदान की आज्ञा कैसे दे सकता हूं ?" प्रताप ने गम्भीर स्वर में कहा।

"नहीं-नहीं," एक साथ कई आवाजें उठीं, "हम आपको ही राणा मानते हैं, कुंवर जगमल को नहीं। आज्ञा दीजिए।"

"जल्दी कीजिए, महाराज!" पुरोहित बुदबुदाया, "मुहूर्त निकल रहा है!"

चिता धू-धू कर जल उठी।

राजपुरोहित के गम्भीर मंत्रोच्चार वातावरण में गूंज रहे थे। अचानक दो घोड़ों की टापें सुनाई पड़ीं। सभी चौंक उठे। प्रताप ने आवाज की दिशा में आंखें उठाईं। अगले घोड़े पर जगमल था। उसके पीछे शक्तिसिंह दिखाई पड़ा।

"कुंवर आ गए!" एक सामन्त ने हल्के स्वर में कहा।

दोनों घोड़े धूल उड़ाते हुए पास आ रुके।

शक्तिसिंह नीचे उतरा। उसका चेहरा कठोर था। बड़े भाई प्रताप की ओर देखकर उसने रूखेपन से पूछा, "अग्निदान की आज्ञा किसने दी?"

जगमल अभी तक घोड़े से न उतरा था। वह चिता की लपटों को घूर रहा था जो उसके पिता के शव को राख में बदल रही थीं। उसकी आंखों में क्रोध की चमक आई। बिना उसकी आज्ञा के चिता जला दी गई थी। मेवाड़ के राणा का यह अपमान! उसने होंठ काटे और नीचे उतर पड़ा।

सामन्त चुप थे। पुरोहित ने मन्त्रोच्चारण जारी रखा। प्रताप ने सामने आकर गम्भीरता से कहा, "आज्ञा मैंने दी है, क्योंकि मुहूर्त बीत रहा था। अभी शान्त रहो! दाह पूरा हो जाने दो।"

जब चिता जल चुकी तो जगमल ने कर्कश स्वर में कहा, "आप लोग थोड़ी और प्रतीक्षा कर सकते थे। अग्निदान की आज्ञा केवल राणा दे सकता है। यह मेवाड़ की परम्परा रही है।"

एक क्षण के मौन के बाद पुरोहित का शान्त स्वर सुनाई

पड़ा. "आप उत्तेजित क्यों हैं ? मेवाड़ की परम्परा पूरी तरह निभाई गई है ।"

"क्या मतलब ?" शक्तिसिंह आगे आया ।

"अग्निदान की आज्ञा मेवाड़ के राणा ने ही दी है, राणा प्रताप ने ।"

जगमल और शक्तिसिंह चौंके । अपनी लापरवाही से स्वयं उन्हीं का कितना बड़ा नुकसान हुआ था, यह समझते उन्हें देर न लगी। शक्तिसिंह का हाथ तुरन्त तलवार की मूठ पर चला गया लेकिन जगमल उसे रोकता हुआ फुसफुसाया, "अभी नहीं ।"

'अभी नहीं तो कब ?' शक्तिसिंह ने आंखों ही में पूछा ।

जगमल सामन्तों के चेहरों पर उभरे भाव पहचान रहा था । अगर शक्तिसिंह इस समय प्रताप पर आक्रमण करेगा तो वे सामन्त उसे जीवित छोड़ने वाले नहीं । ज्योंही उसका हाथ तलवार पर गया था, वे सावधान हो गए थे। वे पहले से ही जगमल तथा उसके साथियों से खार खाए बैठे थे, क्योंकि जगमल को उत्तराधिकारी बनाने से पहले उदयसिंह ने उनसे सलाह नहीं ली थी ।

शक्तिसिंह ने मुट्ठियां भींचीं और सोचा, 'प्रताप को मारकर ही रहूंगा ।' सत्ता के मोह ने उसकी आंखों पर पर्दा डाल दिया था । वह भूल चुका था कि प्रताप उसी का भाई है और इस समय यहां निहत्था खड़ा है ।

जगमल ने शक्तिसिंह से वादा किया था कि गद्दी मिलने के बाद वह उसे सेनापति बना देगा । प्रताप से उसे ऐसी सत्ता पाने की कोई सम्भावना नहीं थी। प्रताप का झुकाव जगमल या शक्तिसिंह की ओर बिल्कुल नहीं था ।

लेकिन अगर प्रताप की हत्या कर दी जाए, तो ?

तब सबसे बड़ा राजकुमार जगमल ही बैठेगा गद्दी पर—और

ज्योंही वह बैठेगा, शक्तिसिंह का सेनापति बनने का सपना पूरा हो जाएगा।

□

"राणा प्रताप की···"

"जय !"

पूरे मेवाड़ में नार गूंज रहे थे। खुशी का सागर लहरा रहा था। फुलझड़ियां रात के आकाश में अठखेलियां कर रही थीं।

और दुष्ट शक्तिसिंह खामोशी से राजपुरोहित के घर की ओर बढ़ रहा था। रह-रहकर वह आवेश से दांत भींचता और सोचता, प्रताप आशीर्वाद लेने पुरोहित के यहां गया है। उसे पुरोहित नहीं, मेरी तलवार आशीर्वाद देगी।

दरवाजा खुला था। भीतर ढीबरी की पीली रोशनी फैल रही थी। शक्तिसिंह आंगन में पहुंचा। दरवाजे पर ठिठककर उसने आहट ली। भीतर से राणा प्रताप का भावुक स्वर सुनाई पड़ा, "मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक मेवाड़ को पूरी तरह स्वतन्त्र न करा लूंगा, सोने-चांदी के बर्तनों में नहीं खाऊंगा, घास के बिछौने पर सोऊंगा और केश नहीं कटाऊंगा। मैं वीर बप्पा रावल, राणा सांगा और सीसौदिया खून की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि जब तक मेरी जन्मभूमि पराधीन रहेगी, मैं चैन की नींद न लूंगा।"

'अभी सदा की नींद सुलाता हूं तुझे !' सोचते हुए शक्तिसिंह ने भीतर झांका। राणा प्रताप राजपुरोहित के सामने झुके हुए थे।

"आओ-आओ, शक्ति, भीतर आ जाओ।" राजपुरोहित ने कहा। शक्तिसिंह कांप गया। इतनी सावधानी के बावजूद राजपुरोहित ने कैसे देख लिया उसे ? इसकी आंखें क्या दीवार को आरपार भेद सकती हैं ?

मुस्कराने की कोशिश करता हुआ वह भीतर घुसा। राणा

प्रताप व्यंग्य से हंसे, "आओ भाई, आज राजपुरोहित का घर कैसे याद आ गया ?"

"सौगन्ध लेने और लिवाने का नाटक देखने आया हूं।" शक्तिसिंह का उत्तर था।

राजपुरोहित मुस्कराया; बोला—"कुंवरजी, प्रताप हमारे महाराणा हैं। हमें इनसे आदर के साथ बात करनी चाहिए। जब राणा उदयसिंह जीवित थे, तब आप दोनों भाई-भाई थे, लेकिन अब राणा और राणा के सहायक का नाता उस भाई के रिश्ते से भी ऊपर है।"

"मैं इसे नहीं मानता।" खच से शक्तिसिंह ने तलवार खींच ली। ढीबरी की फीकी रोशनी में भी उसकी धार कौंधी।

"अरे, यह क्या ?" पुरोहित पीछे हटा।

"शक्ति !" राणा प्रताप भी तलवार खींच चुके थे, "होश में आओ !"

शक्तिसिंह झपटा। तलवारें खनक उठीं।

दूर से जय-जयकार के शब्द सुनाई पड़ रहे थे, "राणा प्रताप की जय !" और यहां···

राजपुरोहित ने कातर होते हुए निवेदन किया, "शक्ति ! पागलपन छोड़ो !"

खन ! खन !

"शक्ति ! मैं कहता हूं, रुक जाओ !"

खन ! खनाक !

"शक्ति ! रुक जाओ वरना मैं सामने कूद पड़ूंगा !"

खनाक ! खनाक !

और अगले ही क्षण शक्तिसिंह की तलवार राजपुरोहित के पेट में खच् से धंस गई। शक्तिसिंह की आंखें फट गईं।

"यह क्या किया, शक्ति ?" प्रताप नीचे झुके।

सचमुच पुरोहित लड़ते हुए भाइयों के बीच कूद पड़ा था। शक्ति की तलवार उसके पेट में गहरी उतर गई थी। पुरोहित की सांस रुंध रही थी, "शक्ति!···प्रताप!···वादा करो···कभी नहीं लड़ोगे···"

"मैं वादा करता हूं।" प्रताप ने उसका सिर गोद में लिया।

"तुम···तुम भी बोलो···शक्ति, बो···लो···!"

शक्तिसिंह सिर झुकाकर चुप खड़ा था! प्रताप ने गहरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। यह बोल क्यों नहीं रहा? क्या अभी इसका पागलपन दूर नहीं हुआ? क्या है इसके मन में?

शक्ति दूसरी ओर घूम गया।

"शक्ति नहीं बोला, प्रताप!" राजपुरोहित की रगें तन रही थीं। मौत उसकी सांस के धागे उलझा रही थी, "गंगा···ज···ल···"

प्रताप ने गंगाजल उसके मुंह में डाला। हल्का-सा झटका खाकर राजपुरोहित का सिर एक ओर झूल गया। शक्तिसिंह की खून से नहाई नंगी तलवार एक तरफ पड़ी थी।

अचानक दौड़कर शक्तिसिंह ने तलवार उठाई। प्रताप फुर्ती से खड़े हो गए। क्या शक्ति फिर से वार करेगा? लेकिन शक्तिसिंह झपटकर बाहर निकल गया। उसके चेहरे पर पश्चात्ताप और शर्म साफ झलक रही थी।

लेकिन वह भागा क्यों? किधर?

जगमल कहां है? प्रताप के माथे पर सिकुड़नें उभर आईं।

२

लोहे के चने

दीवार की खूंटी से चमड़े का काला पट्टा लटक रहा था। जगमल अपनी कटार उस पर घिसता हुआ धार तेज कर रहा था। शक्तिसिंह हांफता हुआ भीतर घुसा और बोला, "भागने की तैयारियां करो !"

"क्यों ? प्रताप को मार डाला ?" जगमल उसकी ओर घूमा।

"मार आता तो बात ही क्या थी !" हांफते हुए शक्तिसिंह ने सारी घटना कह सुनाई। अब हमारे पास एक ही रास्ता है, यहां से भाग जाएं। प्रताप हमें जिन्दा नहीं छोड़ेगा।"

इससे पहले कि राणा प्रताप पर आक्रमण किए जाने की बात जोर पकड़ती, शक्तिसिंह और जगमल उदयपुर का किला

छोड़ चुके थे। धूल उड़ाते, हांफते और पसीने से तर घोड़े अपने स्वामियों को लादे हुए दिल्ली की ओर भाग रहे थे—दिल्ली की ओर, बादशाह अकबर की राजधानी की ओर !

इसके सिवा और कोई चारा भी नहीं था। भाई के साथ विश्वासघात करने के बाद वे अपना काला चेहरा राजपूतों में कैसे दिखा सकते थे ? अब वे जन्मभूमि मेवाड़ के साथ विश्वास-घात करने पर तुल गए थे और चौकन्नी दृष्टि से चारों ओर देखते हुए दिल्ली की ओर लपके जा रहे थे।

दो दिनों तक लगातार भागते रहने के बाद जरूरी हो गया कि कहीं लेटकर थोड़ी नींद ली जाय। रास्ते में अपने सहायकों से उन्होंने तीन बार घोड़े बदले थे और मेवाड़ से सैकड़ों मील दूर निकल आए थे।

रात के पंखों को फैले ज्यादा देर नहीं हुई थी। दोनों एक कस्बे में घुसे। बाजार अभी खुला हुआ था। यदि वे चाहते तो कस्बे के मुखिया के यहां ठहरकर मोटे गद्दों पर चैन की नींद ले सकते थे, लेकिन उन्हें पहचाने जाने का भय था, इसलिए वे एक छोटी-सी धर्मशाला में पहुंचे। वहीं खाना खाया। धर्मशाला की कोठरी का फर्श धूल से पटा हुआ था, लेकिन दोनों इतने थके हुए थे कि उन्होंने धूल पर ही अपनी पगड़ियां बिछा दीं और लेट रहे। कोठरी में रखा दीया जल रहा था।

"जगमल भाई, कहीं अकबर ने हमें दुत्कार दिया तो हम न घर के रहेंगे न घाट के।"

"शी··· !' जगमल ने होंठों पर उंगली रखकर कहा, "धीरे बोलो, रात के सन्नाटे में आवाज दूर तक फैलती है।" उसने दर-वाजा बन्द कर दिया और भीतर से कुण्डी लगाकर बोला, "बादशाह हमें नहीं दुत्कार सकता। यह असम्भव है। तुम देखना, दिल्ली पहुते ही हमें कोई जागीर मिलेगी या सेना में कोई

बड़ा पद।"

शक्तिसिंह दीपक की लौ देखता रहा जिसके नुकीले छोर से काले धुएं का धागा कांपते हुआ छत की ओर उठ रहा था।

अकबर की शक्तिशाली सेनाएं उत्तर भारत में बड़ी तेजी से मुगल-साम्राज्य का विस्तार कर रही थीं। राजस्थान के अधिकांश राजा-महाराजा अकबर की अधीनता स्वीकार कर चुके थे। अकबर ने उन्हें अपने दरबार में बड़े-बड़े पद देकर सम्मानित किया था। बदले में राजपूत राजाओं ने अपने घराने की कन्याएं अकबर के साथ या मुगल घराने में किसी और के साथ ब्याह दी थीं। इस प्रकार के विवाह-सम्बन्ध बनाकर अकबर गहरी चाल खेल रहा था क्योंकि इसके बाद राजपूत विद्रोह नहीं कर सकते थे।

राजपूतों में सबसे शक्तिशाली मानसिंह था। उसने भी अपनी बहन जोधाबाई की शादी अकबर से कर दी थी।

अरावली पर्वत की गगनचुम्बी चोटियां और उनकी हरियाली करवटें···झरनों की मधुर कलकल हवा को गुदगुदा रही थी। एक संकरी पगंडण्डी जंगल को बीच से काट रही थी। दोनों ओर के वृक्षों पर जंगली चिड़ियों का शोर···दूर से सुनाई पड़ती बन्दरों की हूप-हूप···

दो घोड़े धीमी चाल से आगे बढ़ रहे थे। सुबह और दोपहर के बीच का समय था। एक घोड़े पर राणा प्रताप सवार थे, दूसरे पर सादड़ी के सरदार माना झाला।

राणा प्रताप का घोड़ चेतक! आंख के इशारे से ही हवा को भी पीछे छोड़ देने वाला चेतक! उसकी सुघड़ पीठ पर जरी के काम वाली खूबसूरत जीन कसी हुई थी। राणा के पैर रकाब के झटकों के साथ थोड़े-थोडे हिल रहे थे। सिर पर मेवाड़ का

गौरवशाली राजछत्र तना हुआ था। कमर से लटकती तलवार, पीठ पर बंधे तरकश और दाहिने कन्धे पर रखी कमान की शान अनोखी थी। उठी हुई नुकीली मूंछें उनके चेहरे का तेज और बढ़ा रही थीं।

माना झाला ने कहा, "शक्तिसिंह और जगमल अकबर से मिल गए, यह उनकी नादानी ही कही जाएगी।"

राणा प्रताप ने गम्भीरता से उत्तर दिया। "लेकिन झाला, मैं पहले से ही जानता था कि ऐसा होगा। शुरू से ही दोनों की रुचि मौज-शौक की ओर थी। बार-बार समझाने पर भी ये सही राह पर न आ सके।"

"सुना है, अकबर ने जगमल को सहोरी का सहयोगी सूबेदार बना दिया है।"

"सहयोगी सूबेदार?"

"हां। सरोही में पहले अकेला राव सुरतान सूबेदार था। अब उसके साथ जगमल भी सूबेदार है। शक्तिसिंह को मुगल-सेना में महत्वपूर्ण पद दिया गया है।"

प्रताप हंसे—"उसका सेनापति बनने का सपना मेवाड़ में तो नहीं, मेवाड़ के बाहर अवश्य पूरा हुआ!"

माना झाला भी थोड़ा हँसे।

उसी समय करीब से ढोल-ढमाके की आवाज आई।

"हम आ पहुंचे हैं।" माना झाला ने कहा।

ये दोनों भीलों के मुखिया से मिलने जा रहे थे। ये भील अरावली पर्वत की गोद में रहते थे और बड़ा ही कठिन पहाड़ी जीवन व्यतीत करते थे। तीर-कमान से शिकार करना तथा पशु-पालन—यही उनकी आजीविका के साधन थे।

मुखिया झोपड़ी से बाहर निकल आया। डोल पीट रहे भीलों की ओर देखकर उसने हाथ हिलाकर जोर से बाजे बजाने

का संकेत किया ; बोला, "और जोर से पीटो ! नीले घोड़े का सवार आ गया ! मेवाड़ का राणा आ गया !"

ढम ढम ढम ! धचिक्क ! धचिक्क !

चेतक आगे था, माना झाला का घोड़ा पीछे। चेतक का गहरा काला रंग दूर से नीली झाई-सा दिखाई पड़ता था। उसके लम्बे, पतले, मजबूत पैर यों थिरक रहे थे मानो ढोलक की ताल पर नृत्य कर रहे हों।

ढम धचिक्क ! धचिक्क ढम धचिक्क !

पहले राणा प्रताप चेतक से उतरे, फिर माना झाला उतरे। मुखिया की बांछें खिल गईं, "स्वागत है। विराजिए !"

दो दासियां झोपड़ी से निकलीं। उन्होंने अभिवादन किया और तीनों के लिए आसन रखकर वापस चली गईं। राणा प्रताप और माना झाला मुखिया से गले मिलकर बैठ गए।

उनके स्वागत में भील युवक-युवतियों ने लोकगीत गाते हुए नृत्य किया। भोजन आदि से निबटने के बाद मुखिया उन्हें झोपड़ी में ले गया और बोला, "मैं जंगली चाहकर भी आपका योग्य स्वागत नहीं कर सका। क्षमा करिएगा।"

"नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। सबसे बड़ी चीज मन की सचाई है, जो हमने आपमें पाई है।" माना झाला ने कहा।

मुखिया बैठता हुआ विनम्रता से बोला, "अब बताइए, आपने यहां आने का कष्ट क्यों किया ? मुझ दास से आपकी क्या सेवा हो सकती है ?"

राणा प्रताप ने मुखिया की ओर गहरी दृष्टि से देखा, "सौदा महंगा है। भीलों को मेवाड़ पुकार रहा है।!"

"मेवाड़ हमारी मां है। हम उसके लिए जान भी लड़ा देंगे।"

"देखिए मुखिया जी, लगभग पूरे राजस्थान को अकबर अपने कब्जे में कर चुका है। जो भाग स्वतन्त्र बच पाया है, उसमें

मेवाड़ सबसे महत्वपूर्ण है। स्पष्ट है कि उसी पर अकबर सबसे पहले आक्रमण करेगा।"

"हां, इसमें अब देर भी नहीं है।" मुखिया ने हामी भरी।

"हमें जल्दी से जल्दी मुकाबले की तैयारियां करनी हैं। मेवाड़ की सेना के लिए भील तीरंदाज चाहिएं।"

"बस, इतनी-सी बात ? जितने तीरंदाज चाहिएं, ले जाइए।"

"हमने एक और युक्ति सोची है," माना झाला आगे झुके, "हमें बताइए, उस पर आपका विश्वास जमता है या नहीं।"

राणा प्रताप की दसों उंगलियां आपस में उलझ गई थीं। मुखिया की ओर गम्भीर दृष्टि से देखकर बोले, "मैं पूरे मेवाड़ को उजाड़ देना चाहता हूं।"

"जी ?" मुखिया चौंक गया। राणा यह क्या कह रहे हैं ?

"हां, मेवाड़ बिल्कुल उजड़ जाना चाहिए। वहां किसी खेत में हरियाली नहीं होगी, किसी कुएं में पानी नहीं होगा। लोग तमाम गांव और शहर खाली कर देंगे। उनके मकानों में जंगली जानवर रहेंगे।"

"महाराणा, आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"वही जो कह रहा हूं। मेरे शब्दों के दो अर्थ नहीं हैं।"

"लेकिन मेवाड़ के उजड़ने से लाभ ?"

"बहुत बड़ा लाभ है," माना झाला बोले, "यह समझना अपने को धोखा देना होगा कि मुगलों को मेवाड़ अवश्य हरा देगा। उतनी बड़ी सेना के सामने हमारे जवान मुट्ठीभर ही साबित होंगे। इसीलिए हम मेवाड़ को उजाड़ना चाहते हैं, ताकि जीतकर भी मुगल यहां टिकने न पाएं। जब उनके लिए न खाने को होगा, न पीने को तो वे यहां रुककर क्या करेंगे ?"

"वापस चले जाएंगे ?"

"क्यों नहीं ! उन्हें जाना पड़ेगा।" राणा प्रताप बोल उठे, वे बाहर से पानी, भोजन और मांस ला-लाकर कब तक जीवित रहेंगे ? और जैसे ही वे विदा होंगे, राजपूतों का विद्रोही झण्डा फिर से लहरा उठेगा।"

"बताइए, इस युक्ति से आप सहमत हैं या नहीं ?" माना झाला का प्रश्न था।

मुखिया गहरे सोच में डूब गया, "लेकिन मेवाड़ उजड़ने के बाद उसकी जनता कहां जाएगी ?"

"अरावली पहाड़ की गोद में। वह यहां के झरनों का पानी पिएगी और कन्द-मूल, फल-फूल खाकर जीवित रहेगी। आप लोग भी तो रहते हैं न !"

"लेकिन हमें तो इस कठोर जीवन की जन्म से ही आदत पड़ चुकी है। कस्बों और शहरों के लोग यहां रह सकेंगे ?"

"क्यों नहीं ? मेवाड़ का हर स्त्री-पुरुष, बच्चा-जवान और बूढ़ा सैनिक है; और सैनिक के लिए पहाड़ों की गोद और फूलों की सेज में कोई अन्तर नहीं होता।"

मुखिया उत्साह से उठ खड़ा हुआ, "आपकी यह युक्ति अद्भुत है। हम मुगलों को लोहे के चने चबाकर रहेंगे।"

दोनों राजपूतों ने अपनी तलवारें निकाल लीं और मुखिया ने जहर-बुझा तीर निकाला। तीनों हथियार पास लाकर छुआए गए, ऊपर उठाए गए। तीनों स्वर एक होकर गूंज उठे, "जय एकलिंग ! जय मेवाड़ !"

३

घाव कब भरेगा?

वह कड़वी याद···चित्तौड़ के पतन की वह कड़वी याद···

राणा प्रताप घास के बिछौने पर लेटते और उनकी आंखों के सामने चित्तौड़ का किला घूम जाता जहां कभी वीर सीसोदियों का सूर्यमुखी झण्डा फहराता था। दूर-दूर तक कीर्ति फैली हुई थी इस झण्डे की।

लेकिन आज ?

आज वह झण्डा उतर चुका था। उसके स्थान पर फहरा रहा था मुगलों का, बादशाह अकबर का झण्डा।

मेवाड़ के कितने ही महत्वपूर्ण किलों पर मुगलों के दांत गड़ चुके थे! कब उखड़ेंगे वे? उनके घाव कब भरेंगें ?

राणा को नींद न आती। करवटों पर करवटें बदलते रहते। उन्हें पिता उदयसिंह की कायरता याद आती। वह मन ही मन

सोचते, देव एकलिंग ! कौन-सा अपराध किया था मैंने ? मुझे कायर बाप का बेटा क्यों बनना पड़ा ?

सचमुच उदयसिंह ने राजपूतों की वीरता पर कलंक का टीका ही तो लगाया था ! ज्यों ही उसे समाचार मिला था कि अकबर की सेनाएं चितौड़ की ओर रवाना हो गई हैं, वह चितौड़ से भागकर पहाड़ियों में छुप गया था।

राजपूत और पीठ दिखाकर भागे ?

राणा प्रताप चाहकर भी इस पर विश्वास न कर पाते। उन्हें लगता कोई बुरा सपना देखा है उन्होंने।

लेकिन सचाई सचाई थी। उदयसिंह ने जो किया था, उसका फल मेवाड़ आज तक भुगत रहा था। मेवाड़ का चितौड़ और उस पर मुगलों का झण्डा !

उदयसिंह पीठ दिखाकर अकेला ही नहीं भागा था, साथ में अपनी कई रानियों, बेटों तथा दास-दासियों को भी ले गया था। भागने वाले उन बेटों में जगमल और शक्तिसिंह भी थे। उदयसिंह ने कहा था, "आओ बेटा प्रताप, साथ चलो।" लेकिन प्रताप ने साफ जवाब दिया था, "नहीं, मैं नहीं जा सकता। मैं चितौड़ की रक्षा करूंगा।"

"चितौड़ की रक्षा हमारे सेनापति कर लेंगे। हमें संकट में पड़ने की क्या आवश्यकता है ?"

प्रताप ने कटुता से जवाब दिया था, जब आपको विश्वास है कि चितौड़ की रक्षा हो जाएगी तो भाग क्यों रहे हैं ?"

उदयसिंह को कोई जवाब देते न बना था लेकिन यह उससे कैसे सहन हो सकता था कि उसका बेटा उसी से उलझे ? उदयसिंह का चेहरा कठोर हो गया था। जगमल तुरन्त बोला था, "प्रताप साथ चलना हो तो चलो और रुकना हो तो रुको। तुम्हारी मनोवल करने का समय हमारे पास नहीं है।"

"आप जाइए, मैं यहीं ठीक हूं।"

दया व घृणा के मिले-जुले भावों से उनकी ओर देखकर जगमल ने मुंह बिचकाया था मानो प्रताप बहुत बड़ी मूर्खता करने जा रहे हों। और चले गए थे वे लोग—सफेद खून वाले वे कायर राजपूत!

ज्यादा से ज्यादा हथियारों और खाने-पीने की सामग्री का प्रबन्ध करके चित्तौड़ का किला अन्दर से बन्द कर लिया गया।

फिर एक दिन दूर से युद्ध के नगाड़ों की आवाज आई। प्रताप ने किले की दीवार पर चढ़कर देखा। अकबर की विशाल सेना आ पहुंची थी और किले पर घेरा डाल रही थी। हाथी चिंघाड़ रहे थे, घोड़े हिनहिना रहे थे। रह-रहकर सैनिकों की टुकड़ियां 'अल्ला हो अकबर' के नारे लगाती थीं। हाथियों की कतारें, रथों की कतारें, घोड़ों की कतारें, प्यादों की कतारें! चारों ओर शत्रुओं का समुद्र-सा लहरा रहा था।

किले के भीतर लगभग आठ हजार राजपूत हथियारों से लैस होकर तैयार थे, लेकिन मुगल-सेना उनसे कई गुना बड़ी थी। उसमें हजारों सैनिक उन देशद्रोही राजपूतों के भी थे जो अकबर से मिल गये थे। ये सैनिक जानते थे कि राजपूत किन-किन तरीकों से युद्ध करते हैं। घर के भेदियों के कारण मुगल-सेना की ताकत वैसे ही दुगुनी हो गई थी।

किले की दीवार में बने छेदों में से चित्तौड़ की तोपें निशाने लेने लगीं। वे रह-रहकर गरज उठतीं और मुगल-सेना का एक हिस्सा छितरा जाता।

लेकिन कब तक गरजेंगी ये तोपें? कब तक चित्तौड़ का बारूद समाप्त न होगा? मुगल-सेना में सैनिकों की कमी नहीं थी। सौ मरते तो पांच सौ उनकी जगह ले लेते। और मुगलों की तोपें भी कम शक्तिशालिनी थोड़े ही थीं! चित्तौड़ की तोपें एक

बार आग उगलतीं तो वे दस बार उगलतीं। बड़े-बड़े गोले हवा में उछलकर किले की दीवार फांद जाते और भीतर गिरकर भयानक विनाश मचा देते।

एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, यों छह महीने बीत गए। चित्तौड़ उजड़ चुका था। उसके सैकड़ों सेनानायक मारे गये थे। भोजन समाप्त ही होने को था। चारा न मिलने के कारण घोड़े दुबले हो गए थे।

धांय ! धड़ाम !

गोले छूटते। आकाश में उनकी प्रतिध्वनियां गड़गड़ा उठतीं। धमाके से कांपती हवा किले के भीतर आती और मौत अट्टहास कर उठती, "राजपूतो, सावधान ! मैं आ रही हूं !"

तब राजपूतों ने भी कह दिया, "आओ, तुम्हारा ही इन्तजार है !"

घोषणा कर दी गई—जौहर होगा। राजपूत रमणियों ने अपने वीरों को केसरिया वस्त्र पहनाए; तिलक किया; पूजा की; चावल चढ़ाए; तलवार थमाई और गद्गद स्वर में कहा, "जाओ और कभी वापस मत आओ। आओगे, तो भी हम जीवित नहीं मिलेंगी।"

वीरों के चेहरे आवेग से लाल हो गए थे। अन्तिम विदा दी जा रही थी उन्हें ! बोले, "हम जा रहे हैं; रणभूमि हमें बुलाती है। और जाओ तुम भी ; तुम्हें आग बुलाती है। जीवित मत रहना। रहोगी, तो भी हमें कभी नहीं देखोगी।"

सुबह दरवाजे खुलने वाले थे। रात को गोलाबारी रोक दी गई। सुगन्धित चन्दन की तीन विराटकाय चिताएं तैयार की जा रही थीं—सीसौदिया, राठौर और चौहान राजपूतों के डेरों पर।

आग की खुराक—घी और तेल। खब भडकेंगे शोले ! जितना

घी जहां था, जितना तेल जहां था, जितना चन्दन जहां था, इकट्ठा किया गया।

मुगलों ने भी गोलाबारी रोक दी थी—लगातार युद्ध करने के बाद आराम जरूरी था।

रात को किले के भीतर रोशनी फूटती दिखाई दी। अंधेरी रात में लाल पीली लपटें भयावह लग रही थीं, जो लगातार तेज होती जा रही थीं।

फिर नगाड़े गड़गड़ा उठे—ढिकढिक ढम···कड़िक···कड़िक··· कभी इस शोर का तीखापन कम होता तो राजपूत रमणियों के मंगल-गीत के सम्मिलित स्वर सुनाई पड़ते। वे गा रही थीं··· जिंदगी के गीत गा रही थीं···और आलिंगन कर रही थीं मौत का!

"जय मेवाड़! जय मेवाड़!!" चिता को घेरकर खड़े राजपूत नारे लगा रहे थे। पास के छज्जे से चार-चार, पांच-पांच, दस-दस की टोलियों में स्त्रियां आग में कूद रही थीं। किसी की तो आंख में आंसू होता! किसी के तो होंठ जरा बिदकते! किसी के तो पैर जरा कांपते! वे गम्भीर चेहरा लिए छज्जे पर आतीं और कूद जातीं सुगन्धित लकड़ियों की पवित्र आग में।

कड़िक···कड़िक···ढम···कड़िक···

आग में भुनती स्त्रियां कभी-कभी चीखने लगतीं तो ढोल-नगाड़ों की आवाज तेज हो जाती। आग की लपलपाती जिह्वा उनके कोमल शरीर चाट रही थी। चटकती हड्डियों की कड़-कड़ाहट और जीवित मांस जलने की बू चारों ओर फैली थी।

किसी की मां जल रही थी, किसी की बहन जल रही थी, किसी की बिटिया जल रही थीं।

प्रताप तलवार की मूठ उंगलियों में भींचे एक ओर खड़े थे। चिता की गर्मी से उनका चेहरा झुलस रहा था, लेकिन उत्तेजन

में उन्हें होश नहीं था।

धुआं ! घुटन ! चीखें ! गड़गड़ाते हुए नगाड़ों का रुदन !

"प्रताप !"

प्रताप ने पीछे घूमकर देखा। उसे फत्ता ने पुकारा था—सीसौदिया फत्ता ने, जो वीरता के लिए इतिहास में अमर हो गया। प्रताप उसके करीब गए। फत्ता उन्हें एक कोने में ले गया और उनकी आंखों में कुछ देर तक घूरने के बाद बोला, "प्रताप, तुम राजघराने के सबसे बड़े कुंवर हो !"

प्रताप मुस्कराए, "कैसा राजघराना भाई ! कल सुबह किला खुलेगा और सारा खेल समाप्त !"

"लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। देखो प्रताप, मैं चाहता हूं, तुम जीवित रह जाओ। तुमसे मैंने बड़ी-बड़ी आशाएं बांध रखी हैं।"

प्रताप खिलखिला पड़े, "आप मेरी परीक्षा ले रहे हैं ? क्या आप सोचते हैं, मैं भी अपने पिता की तरह पीठ दिखाकर भाग जाऊंगा ? नहीं ! कल हम एक-दूसरे के सिर उतरते देखेंगे। आप से ज्यादा यवन न मारे तो मेरा नाम प्रताप नहीं।"

फत्ता ने प्रताप के दोनों हाथ पकड़ लिए, "इस वीर घड़ी में अपने पिता की कायरता मत याद करो, कुंवर !"

"याद आप ही ने दिलवाई है।" प्रताप ने हाथ छुड़ाने की कोशिश की लेकिन फत्ता ने उन्हें मजबूती से पकड़ा था।

"देखो कुंवर, तुम्हारे पिता ने भागकर प्राण बचाए तो हैं पर कोई पूछे कि उनके प्राण बचने से जन्मभूमि को लाभ क्या हुआ ? ऐसे कापुरुषों का जीवित रहना न रहना बराबर है। लेकिन तुम तो कापुरुष नहीं हो !"

"आपका आशय ?"

"यही कि तुम गुप्त सुरंग से बाहर निकल जाओ।'

"यह नहीं हो सकता !"

"पूरी बात तो सुनो ! यदि तुम कल के युद्ध में भाग लोगे तो मेवाड़ एक ऐसा वीर खो देगा जो आगे चलकर मुगलों का सबसे बड़ा शत्रु बन सकता है। मेरी बात मानो, प्रताप ! चलो, सुरंग की ओर। तुम्हारा चेतक प्रतीक्षा कर रहा है। तुम जीवित रहो, यह मेरी नहीं, मां मेवाड़ की इच्छा है। चलो, चलो भी !" उसने जबरदस्ती प्रताप को एक ओर धकेला।

उफ ! उस दिन की कड़वी याद···यह रिसता घाव कब भरेगा ?

चित्तौड़ के उस अन्तिम युद्ध को प्रताप अपनी आंखों से नहीं देख पाए थे लेकिन वह कितना भयानक रहा होगा, इसे वह खूब समझते थे।

सुबह किले का दरवाजा खोल दिया गया था और मतवाले राजपूत हुंकारते हुए निकल पड़े। उनके हाथों में नंगी तलवारें चमक रही थीं, जो मुगलों को गाजर-मूली की तरह काट रही थीं। एक-एक राजपूत ने मरने से पहले सैकड़ों को मौत के घाट उतारा।

फत्ता खप गया, उसके सारे वीर साथी खप गए। यवन सेनाएं किले में घुसीं तो उनका स्वागत किया जौहर की चिताओं के धधकते अंगारों ने, बिखरी हड्डियों और अधजले मांस के लोथड़ों ने।

मेवाड़ का सूना राजमहल अट्टहास कर उठा, "यवनो, तुम जीतकर भी हार गए !"

मुगल सिपहसालार आगबबूला हो गया, "कत्ल कर दो ! सबको मार डालो !" वह चीखा।

जो भी सामने पड़ा—बच्चा, बूढ़ा, जवान, लूला, लंगड़ा—सबको मार डाला गया। चित्तौड़ के तीस हजार निहत्थे बेकसूर

निवासी मुगल तलवार की बलि चढ़ गए। राजपूताने ने ऐसा भयानक कत्लेआम कभी नहीं देखा था। दोपहर होते-होते एक भी नगरवासी जीवित नहीं था।

अकबर पर जीत की खुशी की खुमारी चढ़ गई। उसके सामने जनेउओं का डेर लगाया जा रहा था। खून से सराबोर लाल जनेऊ! चित्तौड़ की निरपराध जनता के जनेऊ! तराजू पर तोला गया उन जनेउओं को। वे ७० मन से अधिक थे!

४

जत्थे का अपमान

"मैं इस कत्लेआम का बदला लूंगा। चित्तौड़ मेरा है, मेवाड़ का है।" राणा को सब याद आता और वह उत्तेजित होकर हुंकारते।

उदयसिंह चित्तौड़ से भागकर उदयपुर के किले में चले गए थे : जो नया-नया ही चुनवाया गया था। वहीं उनकी मृत्यु हुई और गद्दी पर राणा प्रताप आए।

योजना के अनुसार मेवाड़ उजाड़ा जा रहा था। जनता ने अपने सारे काम-धन्धे ठप कर दिए और मकानों को खाली करने लगी। समुद्र में जैसे छोटी-छोटी लहरें उठती हैं, उसी तरह उनके छोटे-छोटे झुण्ड अरावली पर्वत की ओर बढ़ते और जंगलों में समा जाते। किसी के चेहरे पर एक शिकन तक न थी। छिपा विद्रोह शुरू हो चुका था।

रात की खामोशी में जंगली जानवरों का दहाड़ें सुनाई पड़तीं। लेकिन कुछ ही दिनों में लोगों को इसकी आदत पड़ गई। हर समय वे अपने हथियार तैयार रखते—जाने कब जरूरत पड़ जाए! रात को आग जलाई जाती जिससे रोशनी होती रहे और जानवर भी दूर रहें। कई बार खूंखार शेरों, भेड़ियों आदि से उनकी भिड़न्त हो जाती, जिससे कभी-कभार कोई जान से हाथ भी धो बैठता।

लेकिन सब खुश थे। उनका कायर राजा उदयसिंह मर चुका था और जो नया राजा गद्दी पर बैठा था, वह वीर था—बहुत वीर था। और वह तपस्वी भी था—घास के बिछौने पर सोता, पत्तल में खाना खाता।

फिर साहस और धैर्य में जनता कैसे पीछे रहती!

घोड़ा उदयपुर के राजमहल के सामने रुका। घुड़सवार ने एक नवयुवक को रस्सों से बांधकर गठरी-सा बना रखा था। घोड़े से उतरकर उसने निर्दयता से उसे जमीन पर पटक दिया। युवक कराहा। घुड़सवार ने उसके पैर के बन्धन इतने ढीले किए कि वह चल-फिर सके। "चल बेशर्म! अपनी सूरत राणा को दिखा!" घुड़सवार ने उसे दरवाजे की ओर धकेला।

उसके दोनों हाथ पीठ की ओर करके जकड़ दिए गए थे। जब वह राणा प्रताप के सामने उपस्थिति किया गया, शर्म के मारे वह सिर न उठा सका।

"महाराज, यह युवक खेती करता हुआ पकड़ा गया है।" घुड़सवार ने कहा।

राणा ने युवक की ओर जलती दृष्टि से देखा, "यह सच है?" वह उठकर युवक के पास पहुंच गए।

उनकी गर्म सांस की छुअन महसूस करते ही युवक की धड़कन बढ़ गई और गले से एक शब्द भी न फूट सका।

"मेवाड़ में खेती की मनाही है, तुम नहीं जानते ?"

"जानता हूं महाराज, लेकिन···लेकिन···"

"लेकिन तुम अपनी जीभ के गुलाम हो। बोलो, तुम्हें क्या सजा दी जाए ?"

युवक ने ऊपर देखा। उसकी आंखों में आंसू थे। "मुझे··· मुझे क्षमा कीजिए, महाराज, फिर कभी यह भूल न करूंगा।"

प्रताप गम्भीर हो उठे, "जानते हो युवक, मैं तुम्हारी जगह होता तो क्या कहता ?"

युवक चुप रहा।

"मैं कहता कि मेरा सिर उतार लो, और उसे भाले की नोक पर टांगकर पूरे मेवाड़ में घुमाओ, जिससे सब देख सकें कि राजपूत अपराध क्षमा नहीं किया करते—भले ही वह पहला अपराध हो।"

युवक डर के मारे पीला पड़ गया।

पलभर मौन रहने के बाद राणा ने निर्णय दे दिया, "क्षमा मांगने वाले इस कायर का वध कर दो!"

गुजरात के सामन्त ने अकबर के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। समाचार मिलते ही दिल्ली से सेना रवाना कर दी गई। राजा मानसिंह साथ था।

सेना की रवानगी से कुछ दिन पहले दिल्ली से घुड़सवारों का एक जत्था गुजरात की दिशा में भेजा जा चुका था। इस जत्थे का काम छोटे-बड़े राज्यों में अकबर का आतंक फैलाना था। मुगल झण्डों तथा नगाड़ों के साथ यह जत्था जिधर से गुजरता तो बादशाह के गुलाम राजपूत तरह-तरह की सौगातें

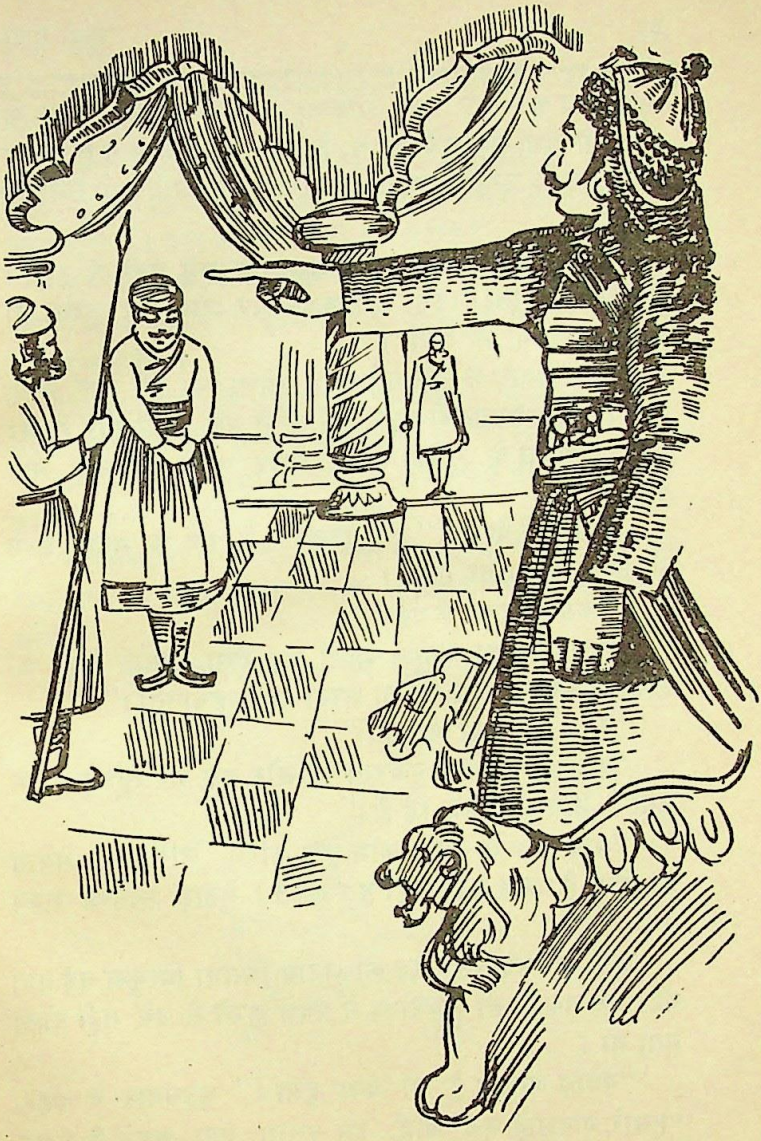

उसके साथ कर देते। जो थोड़े-बहुत छोटे राज्य अकबर के हमलों से अभी तक बचे हुए थे, वे इस निहत्थे जत्थे से ही इतना घबरा गए कि उन्होंने अपने-आप मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली।

राणा प्रताप के जासूस सारे समाचार उन्हें पहुंचाते रहते। भारतीय राजपूतों के इस डरपोकपन पर राणा को गुस्सा भी आता और दया भी आती।

जत्था मेवाड़ के पास पहुंचा तो सीमा पर ही रोक लिया गया। तीर-कमानधारी अधनंगे भीलों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। भीलों के मुखिया ने गरजकर पूछा, "कौन हैं आप लोग ?"

"इसे नहीं देखते ?" एक घुड़सवार ने गर्व से मुगल झण्डे की ओर इशारा कर दिया।

"किसका झण्डा है यह ?"

घुड़सवार हंसा, "हमने पहली बार ऐसा इन्सान देखा जो बादशाह-सलामत अकबर का झण्डा नहीं पहचानता।"

"आप लोग क्यों आए हैं ?"

"शहंशाह की सेना गुजरात की ओर कूच कर रही है। हम सेना के आगे-आगे चल रहे हैं।"

"आप शौक से अपना काम पूरा करिए, लेकिन यह मेवाड़ की सीमा है, आप इसमें नहीं घुस सकते। मेवाड़ स्वतन्त्र राज्य है।"

जत्थे के लिए इस तरह का जवाब मिलना बिल्कुल नई बात थी। अब तक किसी भी राज्य में प्रवेश करने से उसे नहीं रोका गया था।

"मेवाड़ आजाद है तो क्या हुआ ?" घुड़सवार ने कहा, "हमारे बादशाह जब चाहें, इसे गुलाम बना सकते हैं। हट

जाओ रास्ते से ।"

भीलों ने खचाक से तीर खींच लिया । मुखिया की रगें तन उठीं—"आपको मालूम होना चाहिए कि भील अपनी बात के पक्के होते हैं । आप सीमा में नहीं जा सकते !"

जत्थे को अकबर ने आज्ञा दी थी कि वह बिना किसी बड़े कारण झगडे में न पड़े । घुड़सवारों ने चारों ओर तने तीरों के नुकीले फल देखे ।

"अच्छा, अभी तो हम जाते हैं लेकिन···" एक घुड़सवार ने कहना चाहा, लेकिन दूसरे ने उसे इशारे से रोक दिया ।

नगाड़े, शहनाई आदि साज एक ऊंट पर थे जो अपनी बेडौल चाल से जत्थे के बीच में चल रहा था ।

जत्था आंखों से ओझल हो गया तो मुखिया ने एक भील को पास आने का संकेत किया, "राणा प्रताप को इसकी सूचना दी जाए !"

भील तुरन्त पहाड़ी ढलान पर दौड़ चला ।

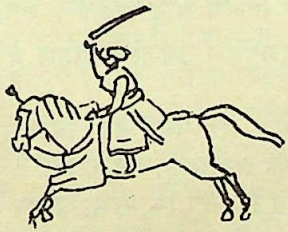

५
अब देर नहीं

राजा मानसिंह का दूत उदयपुर के दरबार में पेश किया गया। वह अदब के साथ राणा प्रताप के सामने झुका और बोला, "शहंशाह अकबर के सेनापति मानसिंह गुजरात के सामन्त को हराकर दिल्ली लौट रहे हैं। दो दिनों के बाद वह मेवाड़ के पास से गुजरेंगे। उनकी ख्वाहिश है कि आपसे मुलाकात करें।"

प्रताप मुस्कराए, "वह मुझसे क्यों मिलना चाहते हैं?"

"यह मैं कैसे कह सकता हूं, महाराज?" दूत फिर झुका।

"अपने सेनापति से कहो कि राणा प्रताप को उनसे मिलकर बड़ी खुशी होगी!" प्रताप ने गम्भीरता से कहा। दूत विदा हुआ।

अरावली पर्वत की खूबसूरत तराई में, एक नदी के किनारे

मेवाड़ का भव्य तम्बू बनाया जाने लगा। आसपास की जंगली झाड़ियां काटकर साफ कर दी गईं और सुगन्धित फूलों के गमले सजा दिए गए। तम्बू में रेशमी कपड़ों की दीवारें खींचकर चार बड़े-बड़े कमरे बनाए गए।

एक कमरे में मानसिंह के लिए उपहारों का संग्रह किया गया। सोने-चांदी के कलात्मक बर्तन, चांदी के तारों से गुंथे गजरे तथा कांसे का ढला मेवाड़ का राजचिह्न उपहारों में प्रमुख थे। नाटे कद का लेकिन भरे हुए पुट्ठों वाला तथा बहुत तेज दौड़ने वाला एक घोड़ा भी मानसिंह को देने के लिए जरी की कामदार जीन तथा सुनहरे गहनों से सजाया जा रहा था।

दूसरा कमरा मेवाड़ के संगीतकारों के लिए था। राणा प्रताप ने इस कमरे में आकर एक सेवक से कहा, "सभी संगीतकार मुगल वेश-भूषा में आएंगे, याद है न ?"

"हां, महाराज !"

"नर्तकी भी उसी वेश-भूषा में होनी चाहिए !"

"आपके आदेशों का पालन हो रहा है, अन्नदाता !"

राणा प्रताप तीसरे कमरे में पहुंचे। यहीं मानसिंह के सोने का इन्तजाम हो रहा था। पलंग पर रेशमी चादर बिछी थी जिस पर कसीदाकारी से हिरन के शिकार का दृश्य अंकित था। एक सेविका शय्या पर इत्र का छिड़काव कर रही थी। पास ही एक खूबसूरत चौकी पर शराब पीने के प्याले रखे गए थे। कमरे के प्रवेशद्वार पर फूलों के मोटे-मोटे हार लटकाकर पर्दे की रचना की गई थी। सारी व्यवस्था देख-भालकर राणा प्रताप चौथे कमरे में पहुंचे, जो सबसे बड़ा था।

यहां उनका बड़ा बेटा अमरसिंह उपस्थित था। पिता को देखकर उसने सादर अभिवादन किया। राणा प्रताप मुस्कराए; बोले, "मानसिंह को अच्छी तरह मालूम हो जाना चाहिए कि

मेवाड़ के राजपूत उससे कितनी घृणा करते हैं !"

"आप चिन्ता न करें, ऐसा ही होगा।"

यह कमरा नृत्य आदि के बाद मानसिंह के सम्मान में दिए जाने वाले भोज के लिए सजाया जा रहा था। बीच में एक बहुत लम्बी ऊंची-सी चौकी थी, जिसके दोनों ओर सुन्दर आसनों की कतार लगी थी।

भोर होते ही तम्बू में से शहनाई के मधुर स्वर फूटने लगे। वातावरण शान्त था। आकाश का लाल रंग शहनाई की मीठी तान से जैसे और लाल हो उठा हो। थोड़ी देर बाद तराई के वृक्षों पर चिड़ियों का कलरव गूंजने लगा जो बड़ा भला लग रहा था। सुबह की कच्ची हवा में जंगल की सोंधी-सोंधी खुशबू मन को प्रसन्न कर रही थी।

मानसिंह की पालकी तम्बू की ओर बढ़ रही थी। पालकी को आठ कहार उठाए हुए थे। उनकी मजबूत बाहों की ठोस मछलियां चमचमा रही थीं। पालकी के आगे-आगे तीन शानदार घोड़े सधी हुई चाल से चल रहे थे। उन पर सवार मुगल सैनिकों ने छाती के सामने एक-एक नंगी तलवार तान रखी थी।

तीनों घोड़ों के आगे एक ऊंट चल रहा था। उसकी पीठ पर नगाड़े, शहनाई आदि साज थे। उन्हें बजाने वाले बड़ी शान से आसपास देख रहे थे।

ऊंट के आगे एक काबुली घोड़ा चल रहा था। उस पर बैठे घुड़सवार ने बड़े रौब से मानसिंह का झण्डा तान रखा था।

काबुली घोड़े के आगे एक और काबुली घोड़ा था जो पूरे काफिले में सबसे सुन्दर था। उसके सवार ने बादशाह अकबर का झण्डा धारण कर रखा था। यह घोड़ा सैनिक चाल न चलकर दाएं-बाएं डोलता हुआ बड़ी मस्ती के साथ चल रहा था।

मानसिंह की पालकी में हल्के धचके लग रहे थे। पर्दा हटाकर वह अरावली पर्वत का सौंदर्य निहार रहा था। पीछे पीछे चार घोड़ों का जत्था चल रहा था। घोडों की पीठ पर कीमती सौगात लदी थी, जिन्हें मानसिंह राणा प्रताप के लिए खास गुजरात से लाया था। इस जत्थे के पीछे सुरक्षा के लिए कुछ सैनिक चल रहे थे।

दूर से तम्बू दिखाई पड़ा तो मानसिंह मुस्कराया। उसकी सवारी तम्बू के लोगों ने देख ली थी और मेवाड़ के सामन्तों व सेवक-सेविकाओं में हलचल मच गई थी।

अगवानी के लिए तीन घोड़े तम्बू से रवाना हुए। करीब आने पर मानसिंह ने देखा कि बीच के घोड़े पर अमरसिंह सवार था। दोनों ओर के घोड़ों पर मेवाड़ के ध्वज फहरा रहे थे।

राणा प्रताप क्यों नहीं आए अगवानी के लिए? मानसिंह के मन में प्रश्न उठा, लेकिन फिर उसने सोचा. किसी जरूरी काम से तम्बू में रुक गए होंगे!

"मैं अपने पिता और अपनी जन्मभूमि स्वतन्त्र मेवाड़ की ओर से आपका स्वागत करता हूं।" अमरसिंह ने कहा।

इस वाक्य में 'स्वतन्त्र मेवाड़' ये दो शब्द इस तरह कहे गए थे कि मानसिंह को कुछ खटका-सा हुआ। उसने अमरसिंह की ओर घूमने की चेष्टा की, लेकिन अमरसिंह पर्वत की ओर देखने लगा था।

सब तम्बू की ओर बढ़ने लगे।

स्नान आदि से निबट चुकने के बाद भी जब राणा प्रताप दिखाई न पड़े तो मानसिंह का आश्चर्य बढ़ा। उसने अमरसिंह से पूछा, "राणा नहीं आए?"

"आते ही होंगे, महाराज!" अमरसिंह मुस्कराया, "परसों शिकार खेलते समय हमारे एक सामन्त को शेर ने घायल कर

दिया था। पिताजी उसी की खैर-खबर पूछने गए हैं । अब तक उन्हें लौटा आना चाहिए था, लेकिन लगता है, सामन्त की दशा गम्भीर हो गई है ।"

मानसिंह को सुनकर अच्छा न लगा । राणा प्रताप ने एक मामूली से सामन्त को शाहंशाह अकबर के सेनापति से ज्यादा महत्त्व दिया था ! यह अपमान ही तो था—उस मानसिंह का अपमान, जिसके एक इशारे से मुगल-सेना भूखे शेर की तरह दहाड़कर मेवाड़ पर टूट सकती थी।

"आप हमारे संगीत-कक्ष में पधारें!" अमरसिंह ने कहा ।

मानसिंह का ध्यान टूटा, "हां हां, चलिए !"

पर्दा हटाकर दोनों भीतर पहुंचे । नर्तकी ने झुककर सलाम किया। संगीतकारों ने भी अपनी-अपनी जगह से उठकर सलाम किया।

नृत्य शुरू हुआ तो मानसिंह से न रहा गया, "कुंवर अमरसिंह, मुगल-नृत्य व मुगल-संगीत तो मैं अक्सर देखता और सुनता हूं । मैंने सोचा था कि बहुत दिनों बाद यहां राजपूत-शैली का नृत्य देखने को मिलेगा।"

अमरसिंह ने तुरन्त व्यंग्य-बाण छोड़ा, "मैं अपनी इस भूल के लिए क्षमा चाहता हूं, लेकिन मैंने और पिताजी ने सोचा कि शायद बादशाह के साथ रहने के कारण अब आपको राजपूत-शैली पसन्द न आती हो।"

मानसिंह कटा ; झेंप मिटाने के लिए तुरन्त बोला, "नहीं तो···ऐसी कोई बात नहीं !"

आप अगली बार आएंगे तो राजपूत-शैली के नृत्य का ही आयोजन किया जाएगा।"

जब नर्तकी ने सोने के कटोरे में मदिरा ढालकर सामने रख दी, मानसिंह ने अचरज से अमरसिंह की ओर देखा, "कुंवर-

जी, आप पीते हैं ?"

अमरसिंह हंसा, "मेरे लिए नहीं, आपके लिए मंगाई गई है। मुगल-दरबार में जाने के बाद तो आप पीने लगे होंगे !"

"मुझे कहना ही पड़ेगा कि आप लोगों को मेरे बारे में कई गलतफहमियां हैं।" मानसिंह बुरा मान गया, लेकिन अमरसिंह ने परवाह न की और कहा, "शायद ऐसा ही हो ।"

"शायद नहीं, ऐसा ही है।"

अमरसिंह चुप रहा ।

नृत्य समाप्त हो गया । उपहारों का लेन-देन समाप्त हो गया। मानसिंह थोड़ा आराम कर चुके तो दोपहर के भोजन की तैयारियां होने लगीं । लेकिन अभी तक वहां राणा का आगमन नहीं हुआ। मानसिंह विकल होने लगा ।

सेविका उपस्थित हुई, "महाराज भोजन तैयार है।"

सबने अपने-अपने आसन ग्रहण कर लिए।

"कुंवर अमरसिंह," मानसिंह की विकलता सीमा पार कर चुकी थी, "राणा अभी तक नहीं आए ?"

"आप भोजन शुरू करिए। वह आते ही होंगे।" अमरसिंह बोला। उसी समय माना झाला ने प्रवेश किया । अमरसिंह उठ खड़ा हुआ, "आइए-आइए, अब तक कहां थे आप ?"

"राणाजी के साथ था।" कहकर माना झाला ने मानसिंह की ओर देखा । यह उनकी पहली मुलाकात थी। अमरसिंह ने परिचय कराया । अभिवादन और मुस्कराहटों का आदान-प्रदान हुआ।

"शुरू करिए !" माना झाला ने कहा।

"आप राणा प्रताप के पास से आ रहे हैं न ?" मानसिंह का प्रश्न था।

"हां, मान्यवर !"

"वह कब तक यहां पहुंचेगे ? क्यों न उनकी प्रतीक्षा की जाए ?"

माना झाला ने गमगीन स्वर में कहा, "क्षमा करें तो एक अशुभ सूचना दूं।"

सबने आशंका से माना झाला की ओर देखा।

"राणा ने कहलाया है कि वह इस भोज में सम्मिलित न हो सकेंगे।"

"क्यों ?" मानसिंह चौंका।

"उनके पेट में दर्द है।"

मानसिंह यह सुनकर उठ खड़ा हुआ। उसकी आंखें क्रोध से जलने लगीं। उसने अन्नदेवता का आचमन किया और बुदबुदाया, "राणा के पेट में दर्द है या नहीं, मैं सब समझ गया। आपकी आवभगत के लिए धन्यवाद ! मैं भोजन नहीं कर सकता।"

मानसिंह के सारे अनुचर भी उठ खड़े हुए।

"सुनिए···सुनिए तो सही···"अमरसिंह लपका, लेकिन तब तक मानसिंह कक्ष से बाहर निकल चुका था।

पास ही लगाए गए मुगल तम्बू में पहुंचकर वह वापसी की तैयारियां करने लगा। वह बार-बार क्रोध से होंठ भींच रहा था। इतना बेवकूफ वह नहीं था कि राणा प्रताप का बहाना न समझता। राणा के पेट में दर्द तो क्या होना था, हां वह ऐसे राजपूत के साथ भोजन करना नहीं चाहते थे, जिसने अपनी बहन जोधाबाई अकबर से ब्याह दी थी। मर्म पर यह चोट मानसिंह के लिए असह्य थी।

कुछ सामन्तों के साथ अमरसिंह और माना झाला ने तम्बू में प्रवेश किया। उन्हें देखते ही मानसिंह बोला, "राणा प्रताप से कहिएगा कि उनके पेट-दर्द का इलाज शीघ्र ही किया जाएगा।"

माना झाला ने स्पष्ट कह दिया, "जब आप आएं तो हमारे

दो परम पूज्य भाइयों कुंवर जगमल और शक्तिसिंह को भी लाना न भूलें। राणा उन्हें प्रायः याद किया किया करते हैं।"

वार करने से अमरसिंह भी कैसे चूकता? बोला, "और हो सके तो अपने जीजाजी शहंशाह अकबर को भी साथ लाइएगा।"

तना चेहरा और जलती कनपटी लिए मानसिंह पालकी में जा बैठा; बोला, "कुंवर अमरसिंह! इलाज बहुत महंगा पड़ेगा।

पतित राजपूत की यह हिम्मत? अमरसिंह हंसकर बोला, "इलाज करने पैदल मत आइएगा, हाथी पर आइएगा। यह जानवर काफी ऊंचा और समझदार होता है।"

"चलो!" होंठ काटकर मानसिंह ने आज्ञा दी। कहार पालकी लेकर चल पड़े।

मानसिंह की रवानगी के बाद जहां-जहां उसके पैर पड़े थे, वहां-वहां गंगाजल छिड़का गया ताकि भूमि पवित्र हो जाए। सोने-चांदी के जिन बर्तनों को उसने छुआ था, उन्हें झरने में फेंक दिया गया और तम्बू को आग लगाकर नष्ट कर दिया गया।

मुगल जत्थे की वापसी के बाद शाहंशाह के प्रिय सेनापति का यह अपमान! मेवाड़ पर हमला होने में अब देर नहीं थी।

६
लुढ़कती चट्टानें

हवा का तेज झोंका आया और चेतक द्वारा उड़ाइ गई पीली धूल का गुबार दूर-दूर तक छा गया। पीली धूल ! मेवाड़ की—आजाद मेवाड़ की पीली धूल ! हल्दी घाटी की पीली धूल !

'कुछ ही दिनों में तू खून से नहाकर लाल हो जाएगी !' राणा प्रताप हल्दी घाटी से गुजरते समय सोच रहे थे। चेतक के पैरों के नीचे से जमीन यों फिसल रही थी मानो उसकी भारी नुकीली टापों से डरकर भाग रही हो।

राणा के साथ भीलों का मुखिया तथा कुंवर अमरसिंह भी थे जो काफी पिछड़ गए थे।

"रुको बेटा, रुको मेरे चेतक !" राणा बोले। चेतक रुकगया। घाटी के दोनों ओर उठी पर्वतशिखाओं की हरियाली करवटें

शान्त थीं ।

कुछ ही देर में मुखिया और अमरसिंह आ पहुंचे । "मुगल-सेनाओं से टक्कर लेने के लिए इससे बढ़िया जगह और कोई नहीं हो सकती ।" अमरसिंह ने कहा ।

मुखिया के चेहरे पर मुस्कान तैरी, "पहाड़ों के ऊपर से जब भीलोंके बाण बरसेंगे तो मुगलों को छटी का दूध याद आ जाएगा ।"

चक्करदार पगडण्डियां पार करते हुए ये तीनों एक चोटी की ओर बढ़ने लगे । यहां कुछ भील पहले से उनका इन्तजार कर रहे थे । राणा प्रताप ने चोटी पर खड़े होकर खाई में झाँका, गहरी शान्त और सूनी खाई ! बडे-बड़े पेड़ ऊपर से खिलौने जैसे मालूम पड़ रहे थे ।

तीर के साथ-साथ भील भारी-भारी चट्टानें भी बरसाएंगे जो दुश्मनों को कुचल देंगी ।" मुखिया ने अपने भीलों की ओर देखा, "राणा को एक प्रयोग दिखाया जाए ।"

भीलों ने नत-मस्तक होकर मुखिया की आज्ञा स्वीकार की और दाहिनी ओर बढ़े । उधर पहाड़ की कगार पर एक बहुत बड़ी चट्टान रखी थी, जो बड़ी मेहनत से काटकर और धीरे-धीरे खिसकाकर कगार पर जमाई गई थी । भीलों ने अपने भालों की मूठें चट्टान के नीचे डाल दीं और भालों को कन्धों पर टिका-कर वे जोर से हुमचे । चट्टान हिली—विराट्काय, काली चट्टान !

"जोर लगाओ !" भीलों में से एक ने नारा लगाया ।

"होशियार !" मुखिया ने उत्साह दिलाया ।

और चट्टान खौफनाक शोर मचाती, सामने पड़ती हर चीज को पीसती, उखाड़ती, अपने पीछे धूल की मोटी रेखा उड़ाती पाताल जैसी खाई की ओर लुढ़क चली । दूर होने के साथ-साथ उसका आकार भी छोटा हो रहा था । उसके लुढ़कने का शोर क्रमशः धीमा पड़ा और वह घाटी की सपाट जमीन पर जाकर

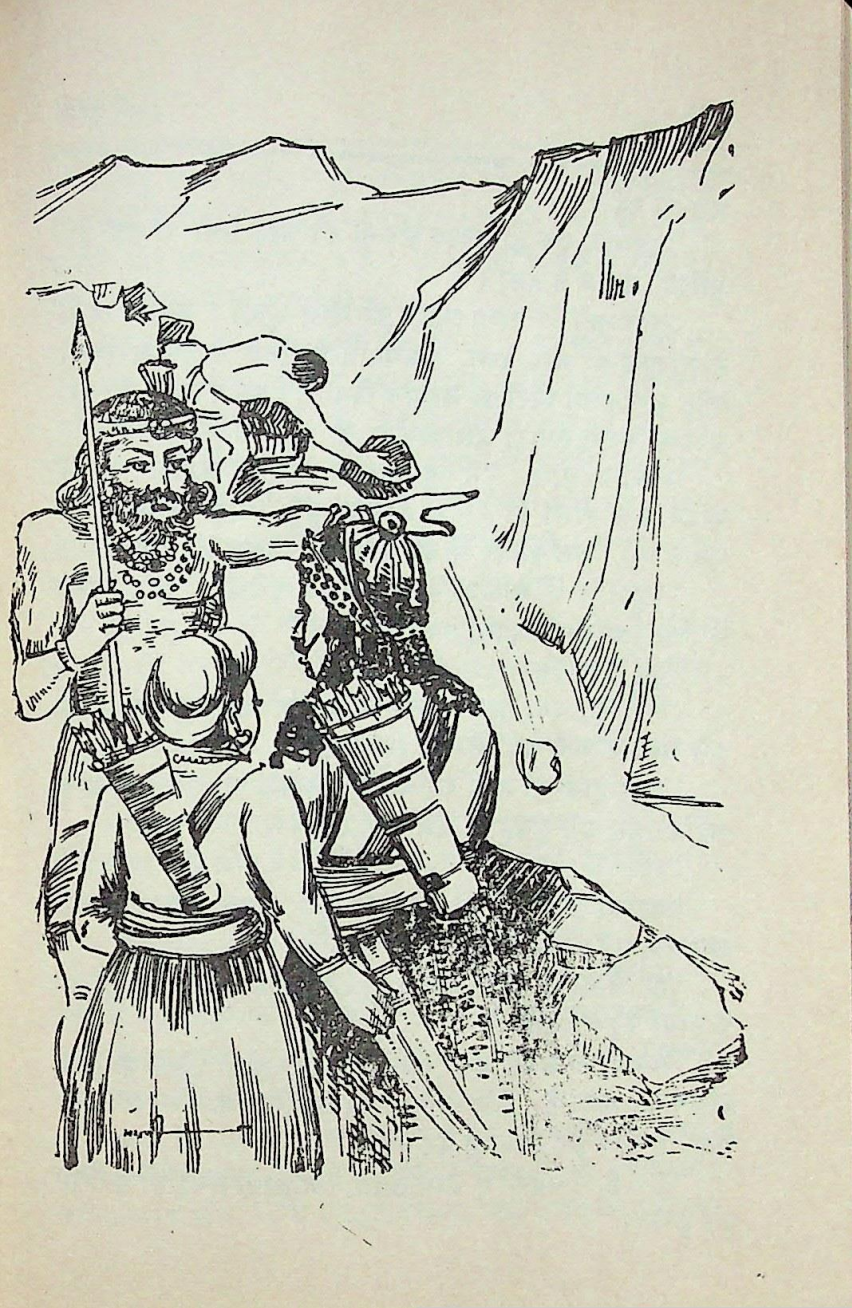

धंस-सी गई ।

"बताइए, एक ही चट्टान सैकड़ों की जान लेगी या नहीं ?" मुखिया संतोष से हंसा ।

"क्यों नहीं !" राणा प्रताप की आंखें कौंधीं । उन्होंने श्रद्धा से आकाश की ओर देखा, "भगवान एकलिंग ने हमें अरावली पर्वत और हल्दी घाटी का वरदान दिया है । इस वरदान का पूरा उपयोग करना हमारी आवश्यकता ही नहीं, कर्तव्य भी है ।"

अमरसिंह बोला, "मैं पहाड़ियों में चक्कर लगाकर चट्टान काटने वाले भीलों को उत्साह दिलाता हूं !" घोड़े पर चढ़ उसने एड़ लगाई । कुछ ही देर में वह आंखों से ओझल हो गया ।

"महाराज !" मुखिया ने राणा की ओर देखा, "आपने सेना के लिए कुछ जंगली हाथी पकड़वाए थे ?"

"हां, उनका क्या हुआ ?"

"वे पालतू बना लिए गए हैं । यदि असुविधा न हो तो उन्हें कल शाम आपकी सेवा में भेज दिया जाए ?"

"दूसरे हाथी तो शाम को भेजिए, लेकिन जो सबसे ऊंचा व कद्दावर हो, उसे सुबह ही भेज दीजिए ।"

"क्यों ?"

"आपको तो मालूम ही होगा कि हम चेतक को हाथी पर छलांग लगाने की शिक्षा दे रहे हैं ।"

"हां, मैं जानता हूं । हल्दी घाटी की लड़ाई में चेतक मानसिंह के हाथी पर उछलेगा ।"

"मेवाड़ का सबसे ऊंचा गजराज कुछ महीनों पहले ही बूढ़ा होकर मर चुका है । छोटे हाथियों पर छलांग लगाने का अभ्यास चेतक ने पूरा कर लिया है पर बड़े···"

"ठीक है, मैं सेवकों के साथ सबसे बड़ा हाथी सुबह ही रवाना कर दूंगा ।"

सुबह राणा प्रताप ने एक की बजाय दो हाथी राजमहल के पिछवाड़े के मैदान की ओर बढ़ते देखे। दोनों ही एक-जैसे विराट् शरीर और समान ऊंचाई के थे। उनके गले में बंधी घण्टियों की टन-टन बहुत मीठी लग रही थी।

एक हाथी पर तीन भील बैठे हुए थे। दो भील हाथी की पीठ पर थे, एक गर्दन पर सवार होकर अंकुश चला रहा था। इस हाथी की पीठ नंगी थी, जबकि दूसरे हाथी की पीठ पर रेशमी झालर बिछी थी। उसके महावत ने भीलों की तरह केवल धोती नहीं पहनी थी, बल्कि उसने पीली पगड़ी और सफेद कुर्त्ता धारण कर रखा था। किसका है यह दूसरा हाथी ? राणा उत्सुकता से चेतक पर सवार होकर मैदान की ओर बढ़े।

दोनों हाथी रुक गए। सूंड उठाकर उन्होंने सलामी दी। अजगर-सी लपलपाती सूंड ऊपर उठी तो नीचे के लम्बे झकझक सफेद दांत सुबह की धूप में चमक उठे।

भीलों ने हाथी से उतरकर राणा को प्रणाम किया और कहा, "इसे हमारे मुखिया ने भेजा है।"

राणा ने मुस्कराकर दोनों को इनाम दिया और दूसरे हाथी के महावत की ओर देखा जो अभिवादन करके अदब के साथ एक ओर खड़ा था।

"तुम कहां से आए हो, भाई ?" राणा ने पूछा।

"ग्वालियर से अन्नदाता !" जवाब मिला, "हमारे राजा की ओर से यह हाथी स्वीकार करिए। इसका नाम रामप्रसाद है··· झुको बेटा, झुको, झुको···महाराज को प्रणाम करो।" महावत रामप्रसाद की ओर बढ़ा।

अगले पैर मोड़कर रामप्रसाद ने जमीन पर माथा टेक दिया। झुकी हुई विराट्काय जीवित शिला ! रामप्रसाद ने चिंघाड़कर जैसे उल्लास प्रकट किया। महावत हंसा, "महाराज, जब तक आप

इसके मस्तक पर हाथ न फेरेंगे, यह उठेगा नहीं।"

"अच्छा ?" राणा प्रताप चेतक से उतरे। करीब जाकर उन्होंने रामप्रसाद का मस्तक छुआ। रामप्रसाद की छोटी-छोटी आंखों में कृतज्ञता के भाव तैरे। धीमी हुंकार के साथ वह उठ खड़ा हुआ।

"आपके लिए ग्वालियर-नरेश का एक सन्देश है।" महावत ने एक पत्र राणा की ओर बढ़ा दिया जो चन्दन की चिकनी, गोल छड़ के चारों ओर लिपटा हुआ था। उसे खोलकर राणा ने पढ़ना शुरू किया, 'आयुष्मान उदयपुर-नरेश वीर राणा प्रताप की सेवा में ग्वालियर-नरेश राजाराम शाह की ओर से 'राम-प्रसाद' नामक हाथी प्रेषित किया जा रहा है। आप मुगलों से युद्ध करने के लिए हल्दी घाटी में तैयारियां कर रहे हैं, ऐसे समाचार हमें मिले हैं। हमें बड़ी प्रसन्नता है कि आपका खून उन राजपूतों की तरह सफेद नहीं है जो यवनों की सेवा करने में ही अपना गौरव समझते हैं। ग्वालियर आपके इस साहस को मान की दृष्टि से देखता है और चाहता है कि आप मुगलों के विरूद्ध युद्ध करने में उसकी सेनाओं का पूरा उपयोग करें। रामप्रसाद के साथ भेजा गया महावत ग्वालियर का दूत भी है, जो इसका प्रतीक है कि यहां का हर आदमी दो आदमियों के बराबर है। हमें विश्वास है कि आप ग्वालियर को सेवा का अवसर प्रदान करेंगे। सदैव आपका, राजाराम शाह।'

कुछ दिन बाद ही ग्वालियर की सेना ने हथियारों से लैस होकर और जोश के गर्म तालाब में नहाकर हल्दी घाटी की

ओर कूच कर दिया। सादड़ी से माना झाला की टुकड़ियां भी आ पहुंची थीं। अरावली के भील सभी सैनिकों को हल्दी घाटी में घुमा रहे थे ताकि वे चप्पे-चप्पे से परिचित हो जाएं।

युद्ध की तैयारियों के समाचार आग की तरह चारों ओर फैल गए। राणा प्रताप के गुप्तचरों का जाल दूर-दूर तक बिछ चुका था।

राजस्थान के बहुत कम राजपूत राणा प्रताप की सहायता करने के लिए आगे आए, फिर भी राणा बिल्कुल निराश नहीं हुए। उन्होंने पहले से ही सहायता की आशा नहीं रखी थी। वे अच्छी तरह समझते थे कि जिन राजपूतों ने मुगलों की सेवा स्वीकार की है, वे नहीं चाहते कि कोई भी राजपूत स्वतन्त्र रहे, क्योंकि ऐसे गर्वीले राजपूतों के सामने वे अपने को ओछा अनुभव करते हैं।

खूनी दिन करीब आ रहे थे···

७

दोपहर की जीत

कुल-देवता भगवान एकलिंग महादेव की पूजा करके राणा-प्रताप मन्दिर से बाहर निकले तो चेतक के पास एक दूसरा घोड़ा दिखाई पड़ा। उसका सवार लगाम पकड़कर पास ही खड़ा था। राणा प्रताप ने उसे पहचाना, वह मेवाड़ का गुप्तचर था।

"मुगल-सेना अब कितनी दूर है ?" राणा ने तुरन्त प्रश्न किया।

"यहां से लगभग १५० मील। राजा मानसिंह के साथ···"

"होश में बात करो !" राणा ने टोक दिया, "राजा नहीं, गुलाम मानसिंह।"

गुप्तचर कुछ झेंपकर बोला, "गुलाम मानसिंह सेना के साथ है। शाहजादा सलीम भी साथ आ रहा है अन्नदाता!"

"शक्तिसिंह और जगमल?"

"शक्तिसिंह सहायक सेनापति के पद पर नियुक्त है। जहां तक मुझे मालूम है, जगमल इस आक्रमण में शामिल नहीं है।"

"वह सरोही के दरबारी नाच-गान में डूबा होगा!" राणा कटुता से हंसे, "अच्छा, अब तुम जाओ और जब मुगल सेना ५० मील दूर रह जाए तो मुझे तुरन्त सूचना दो। और देखो, अपनी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना!"

यह १५७६ का अप्रैल मास था। गर्मियों की शुरुआत हो चुकी थी। पहाड़ी इलाका होने के कारण हल्दी घाटी में उसका कोप नहीं था। जंगल रसीले आमों से लद गए थे। मेवाड़ की जनता जंगली जीवन अपना चुकी थी। वह इन आमों का मजा लूटती, दूसरे फल-फूल खाती, झरनों का पानी पीती और कभी कोई गाय, बकरी या भैंस नजर आ जाती तो दूध दुहकर बंटवारा कर लेती।

सुबह-शाम सैनिक कवायद करते, कुश्तियां लड़ते, दौड़ लगाते, ज्यादा से ज्यादा सांस भरने और रोकने का अभ्यास करते ताकि युद्ध में जल्दी हांफ न जाएं। स्त्रियों और बच्चों को सुरक्षित कन्दराओं में पहुंचा दिया गया।

"मुगल-सेनाएं मण्डगढ़ल में रुक गई हैं। मानसिंह और सलीम कुछ सामन्तों का इन्तजार कर रहे हैं। उनके आ मिलने पर सब एक-साथ रवाना होंगे।" गुप्तचर समाचार लाया था।

राणा ने पूछा, "उनके पास लगभग कितने सैनिक होंगे?"

"चालीस हजार के आसपास।"

"और हमारे पास हैं बाईस हजार। हमारा हर सैनिक उनके दो सैनिकों के बराबर है। इस हिसाब से हमारी सैनिक संख्या चवासील हजार हुई।"

छिपी तैयारियों में मई भी बीत गया। अब मुगल-सेना हल्दी घाटी की ओर बढ़ने लगी। घाटी के मुंह के पास मोजरा नामक किला था जिस पर उसने कब्जा कर लिया। राजपूतों ने इसका विरोध नहीं किया, क्योंकि वे तो चाहते ही थे कि मानसिंह घाटी में प्रवेश करे।

लेकिन मानसिंह भी मंजा हुआ योद्धा था। वह अच्छी तरह जानता था कि घाटी में प्रवेश करना कितना खतरनाक है। उसने मोजरा में ही स्थायी पड़ाव डाल दिया।

लेकिन ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे थे, मुगल सेना की रसद कम होती जा रही थी। मेवाड़ की उजड़ी धरती में तो खाने-पीने लायक कुछ था ही नहीं। मुगल-सैनिक जंगलों की ओर बढ़ने की हिम्मत नहीं कर सकते थे। उन जंगलों के रसीले फल और मधुर झरने उन्हें ललचाते, चिढ़ाते, लेकिन ज्योंही वे उसकी ओर कदम बढ़ाते, भीलों के तीर उनकी छाती के आरपार उतर जाते।

मानसिंह और सलीम को शीघ्र ही परिस्थिति की गम्भीरता का पता चल गया। जरूरी था कि युद्ध जल्दी शुरू होकर जल्दी ही समाप्त हो जाए। राणा की सेनाएं घाटी के उधर थीं। उनसे टक्कर लेने के लिए घाटी में प्रवेश करना पड़ता, जो मानसिंह नहीं चाहता था।

लेकिन कबतक इस तरह पड़ाव डालकर पड़ा रहा जाए?

उस दिन राणा के गुप्तचर दो बहुत महत्त्वपूर्ण समाचार लाए। एक—मानसिंह मोजरा से आगे बढ़कर ठीक हल्दी घाटी के मुंह पर आ गया है। दो—वह बहुत कम सैनिकों के साथ

शिकार खेलने निकला है :

शिकार के शौकीन मानसिंह को पता नहीं था कि राणा की सेनाएं काफी आगे बढ़ चुकी हैं। शिकार करता हुआ वह जहां तक आ गया था, वहां से राणा का शिविर दो-चार मील ही दूर था।

कुछ सामन्तों ने राणा के सामने प्रस्ताव रखा, "अगर अचानक हमला कर दिया जाए तो मानसिंह की जान नहीं बच सकती।"

राणा विचार में डूब गए।

"मानसिंह के मरने के बाद मुगल-सेना की ताकत आधी रह जाएगी।" सामन्त ने कहा।

"आपका कहना ठीक है," राणा बोले, "लेकिन सोचिए, शिकार के लिए निकले शत्रु पर अचानक हमला करना क्या धोखे की बात न होगी? धोखा कायर दिया करते हैं, वीर तो चुनौती देते हैं और लड़ते हैं।"

माना झाला और राजाराम शाह ने राणा का समर्थन किया। सामन्तों ने भूल स्वीकार कर ली।

"हमें अपनी सेनाएं और आगे बढ़ानी चाहिए। मुगलों को पता न चलने पाए।" राणा बोले।

सामन्तों के विदा होने के बाद राणा ने माना झाला और राजाराम शाह की ओर देखा, "मानसिंह हल्दी घाटी के मुंह पर आ डटा है, लेकिन वह भीतर नहीं घुसेगा। ऐसा क्यों न किया जाए कि हम स्वयं घाटी को पार करके उस पर हमला बोल दें?"

"लेकिन तब पहाड़ों पर चट्टानें लुढ़काने वाली योजना बेकार हो जाएगी।"

"नहीं होगी," राणा ने उत्तर दिया, "हमें आगे बढ़ते देख-

कर मुगल-सेना कुछ दूर तक तो घाटी में घुसेगी ही । तब उस पर चट्टानें लुढ़काई जाएंगी । साथ ही आधे से ज्यादा तीरंदाज भील पहाड़ों के ऊपर ही ऊपर दुश्मनों की ओर बढ जाएं। चट्टानों की कमी वे पूरी कर देंगे ।"

मोर्चा जमाया जाने लगा । "पहला हमला मेरा दल करेगा।" राजाराम शाह ने कहा । उसे सेना का दाहिना हिस्सा सौंपा गया था। बायां हिस्सा माना झाला के नेतृत्व में था। बीच के सबसे शक्तिशाली दल के नेता स्वयं राणा प्रताप थे ।

उधर मुगलों का मोर्चा भी लग चुका था । मानसिंह और सलीम बीच में थे । उनके आगे का, याने सबसे सामने का हिस्सा गाजीखान संभाल रहा था । रात को चुपके-चुपके मेवाड़ की सेना गाजीखान की ओर बढ़ चली ।

हाथी रामप्रसाद इतनी सावधानी से जमीन पर पैर रखता था कि इतने विशाल शरीर के बावजूद लेशमात्र भी आवाज न होती । उसके मस्तक को लोहे के जाल ने ढक रखा था ताकि वह भाले, तीर आदि के वार से बच सके । पीठ के दोनों करवटों पर भी लोहे के जाल लटक रहे थे । अंधेरे में उसके विशाल दांतों की सफेदी गायब हो गई थी ।

उस पर सवार राजाराम शाह बहुत गम्भीर था। रामप्रसाद के दोनों ओर राजाराम के पुत्र तथा सामन्तों के चपल घोड़े चल रहे थे। पीछे नंगी तलवारें लिए घुड़सवारों की कतारें थीं । आधी रात बीत गई । आकाश में छटवीं का पतला चांद चुप-चाप सो रहा था। हवा शान्त थी, मानो सहम गई हो ।

सुबह की धुंधली रोशनी पूरब से फूटी तो हल्दी घाटी लग-भग पार की जा चुकी थी । कुछ देर और चलने के बाद जैसे ही कच्ची धूप ने दर्शन दिए, युद्ध की तुरही बजा दी गई ।

दौड़ पड़े मेवाड़ी घोड़े—पीली धूल उड़ाते हुए। 'जय एकलिंग'

के घोष से आकाश गूंज उठा।

गाजीखान के सैनिक भी असावधान नहीं थे। उन्होंने तलवारें खींच लीं और 'अल्लाहो अकबर' के नारों के साथ राजपूतों पर टूट पड़े। मार-काट, शस्त्रों के टकराने, घायल सैनिकों की चीखों आदि से हवा थर्राने लगी।

रामप्रसाद जोर-जोर से चिंघाड़ता हुआ सूंड फटकार रहा था। सूंड का थपेड़ा पड़ने से कभी-कभी मुगल-सैनिक अधर उछल जाते। कई सैनिक तो रामप्रसाद के पैरों के नीचे आकर धूल में मिल गए। दुश्मन को राजाराम शाह के तीरों ने हतप्रभ कर दिया।

"वह रहा गाजीखान!" राजाराम ने तलवार उठाकर नारा लगाया, "बचने न पाए!"

गाजीखान का मुगलिया झण्डा दूर से दिखाई पड़ रहा था। ज्योंही रामप्रसाद उधर बढ़ा मुगल-सैनिकों ने उसे रोकने के लिए भाले उछालने शुरू किए, लेकिन मेवाड़ के वीरों के सामने उनकी एक न चली। कई सैनिक मौत के घाट उतर गए, कई घायल होकर भागने लगे।

एक को भागते देखकर दूसरा भी भागा, दूसरे को देखकर तीसरा और यों कुछ मिनटों में गाजीखान के पूरे दस्ते का साहस छूट गया। गाजीखान ने उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन हल्ले में उसकी आवाज कौन सुनता था! राजाराम का इशारा पाते ही नगाड़े घमघमा उठे जिससे मुगल-सैनिकों में भय का संचार हो गया। अब तो वे किसी भी तरह नहीं ठहर सकते थे।

जिस तरह जंगली झाड़ियां हवा का रास्ता नहीं रोक सकतीं, उसी तरह अब रामप्रसाद का रास्ता भागते सैनिक नहीं रोक सकते थे। सूंड फटकारता और चिंघाड़ता हुआ वह गाजीखान

की ओर बढ़ा। राजाराम के एक बेटे ने झन्न-से गाजीखान की तलवार पर तलवार मारी।

इधर भागते सैनिकों पर पहाड़ियों के ऊपर से भीलों के तीर छूटते और हवा को सांय-सांय काटते हुए मुगलों की छाती में धंस जाते। घायल घोड़े भागते-भागते मौत की आखिरी हिन-हिनाहट के साथ जमीन पर इस तरह लुढ़क जाते मानो अचानक उनके चारों पैरों की हड्डियां तोड़ दी गई हों।

गाजीखान के मुंह से चीख निकल गई। राजाराम के बेटे की कुशल तलवारबाजी से उसके छक्के छूट गए। अचानक उसकी ढाल नीचे गिर पड़ी और वार बचाते-बचाते भी बांह का मांस गहराई तक कट गया। घोड़े को एड़ लगाकर किसी तरह वह भाग निकला।

ये सैनिक जब तक मानसिंह की टुकड़ी में शामिल होते, राणा प्रताप के सैनिक आगे आ गए। थोड़े-बहुत बिखरे व्यूह को तेजी से ठीक कर लिया गया। घावों पर पट्टियां बांधने वाला दल फुर्ती से काम करने लगा।

सूरज अब माथे पर चमक रहा था। जमीन पर जगह-जगह पड़े खून के धब्बों ने अपनी गंध से राजपूतों को और उत्तेजित कर दिया।

राणा का चेतक दौड़ पड़ा। ठीक पीछे माना झाला का घोड़ा था। सामने से 'जय मानसिंह!' के नारे आए। दुश्मनों की बहुत बड़ी टोली दौड़ी आ रही थी। राणा प्रताप ने आंखें सिकोड़ीं—यह राजपूतों की टोली थी। उनकी पोशाकें भी ठीक वैसी थीं, जैसी मेवाड़ के राजपूतों की थीं।

राणा ने माना झाला से कहा, "यह धोखेबाजी है। हमें पता ही न चलेगा, कौन हमारे राजपूत हैं, कौन दुश्मनों के।"

समस्या गम्भीर थी और हल सोचने का समय बहुत कम। माना झाला ने दोनों ओर की पहाड़ियों की ओर आंखें उठाईं। लुढ़कने का इन्तजार करती विराट् चट्टानें···

हाथ हिलाकर विशेष इशारा किया गया। चट्टानों की ओट से झांकते भीलों के बेताब हाथों ने जोर लगाया और···

घड़ड़ड़ !

एक चट्टान लुढ़की—धूल उड़ाती···फिर दूसरी···तीसरी··· चौथी···

अगले ही क्षण हल्दी घाटी मौत के चीत्कारों से भर गई।

इधर राणा प्रताप और माना झाला ने बड़ी तेजी से काम किया। उन्होंने सेनानायकों को, सेनानायकों ने सैनिकों को और हर सैनिक ने दूसरे सैनिक को मेवाड़ का संदेश सुना दिया, "कमर के दाहिनी ओर कटार बांध लो। यह हमारी निशानी होगी। जिस राजपूत के दाहिनी ओर कटार न हो, उसे मुगलों का समझो और काट डालो।"

राजपूतों की दूसरी टोली को मानसिंह रवाना कर चुका था। घाटी होने के कारण दोनों सेनाएं आमने-सामने टकरा नहीं सकती थीं। वे छोटी-बड़ी टोलियों के रूप में ही भिड़ सकती थीं।

राजपूतों से राजपूत टकराए, आजाद राजपूतों से गुलाम राजपूत टकराए, लाल खून से सफेद खून टकराया।

सफेद खून लाल खून के सामने भला कैसे टिकता ? देखते ही देखते मेवाड़ के वीरों ने दुश्मनों को काटकर बिछा दिया और खुशी से चीखते हुए आगे दौड़े, "जय मेवाड़ ! जय राणा !"

मानसिंह और सलीम चिन्तित हो उठे। क्या संख्या में आधे होते हुए भी राणा के वीर जीतकर रहेंगे ? मानसिंह ने सलीम से कहा, "मैं खुद आगे जाता हूं। उसके बिना हालत न संभलेगी।"

सलीम इसके लिए तैयार न था ; बोला, "आपको देखकर दुश्मनों का जोश और भड़केगा। आप बीच में ही रहिए। आगे मैं बढ़ता हूं।"

"नहीं ऐसा नहीं हो सकता। बीच में आपको रहना चाहिए। मैं आप पर किसी तरह का खतरा आते नहीं देख सकता। मैं जाता हूं आगे।"

अभी यह बातचीत चल ही रही थी कि मेवाड़ के घुड़सवार करीब आ गए। वे हाथ उछाल-उछालकर पागलों की तरह चीख रहे थे। सलीम को दाहिनी ओर और मानसिंह को बाईं ओर बढ़ना पड़ा। कौन आगे आए, यह सवाल रहा ही नहीं।

८

शाम की हार

भयानक मारकाट मची हुई थी। राणा प्रताप का झण्डा दूर से ही दिखाई पड़ रहा था। मुगल-सैनिकों का मजबूत मोर्चा मानसिंह के हाथी की रक्षा कर रहा था।

हौदे में बैठा मानसिंह चेतक पर नजर गड़ाए हुए था। दूर से भी वह स्पष्ट देख सकता था कि जिधर चेतक निकल जाता है, मेवाड़ के राजपूत दो की बजाय हज़ार हाथों से लड़ने लगते हैं। राणा के हाथ की तलवार बिजली की तरह लपलपाती है और चौगुने मुगल-सैनिकों के गले धड़ से जुदा होने लगते हैं।

मानसिंह ने आसपास फैले सैनिकों की ओर देखा और मन ही मन मुस्कराया—राणा की चेतक कभी मेरी ओर नहीं बढ़ पाएगा। राणा शेखचिल्ली के लड्डू खा रहा होगा कि मुझे भाला

मारेगा जबकि मेरी परछाईं तक को छू पाना उसके लिए असम्भव है।

फिर भी मानसिंह लगातार महसूस कर रहा था कि जिधर उसका हाथी जाता है, राणा पूरी शक्ति उधर केन्द्रित कर देते हैं। मेवाड़ के राजपूत जान हथेली पर रखकर लड़ते हैं। हर राजपूत मरने से पहले कई मुगलों को मसल देता है।

भरी दोपहरी में खून की होली का यह दृश्य बड़ा ही रोमांचकारी था।

ग्वालियर और सादड़ी के झण्डे भी आतंक फैलाए हुए थे। राजाराम शाह का हाथी रामप्रसाद साक्षात् मौत का दूत बना हुआ था। युद्ध के शोर को भेदकर बार-बार उसकी चिंघाड़ सुनाई पड़ती थी।

सरदार माना झाला के सैनिक खून से सने हुए थे। लेकिन यह उनका अपना खून नहीं था—वह था उन मुगलों का खून, जो उनसे लड़े थे और उनके हाथों मरे थे।

मानसिंह ने अपना हाथी सलीम के हाथी की ओर बढ़ाया और पास पहुंचकर कहा, "ग्वालियर का हाथी किसी तरह मारा जाना चाहिए।"

सलीम बहुत अच्छा तीरन्दाज था लेकिन रामप्रसाद के माथे पर लोहे का जाल फैला होने के कारण तीर धंसने की गुंजाइश ही नहीं थी। मानसिंह ने उपाय सुझाया, "कुछ चतुर सैनिक रवाना किए जाएं, जिनका काम लड़ना न हो!"

"तो?"

"वे किसी तरह अपनी रक्षा करते हुए रामप्रसाद तक पहुंचे और उसकी ओर भाले उछालें। रामप्रसाद चिंघाड़कर सूंड ऊपर

उठाएगा। ठीक उसी समय उसके मुंह के भीतर तीर मारा जाए।"

"उपाय तो जबरदस्त है।" सलीम ने मानसिंह की तारीफ की।

तुरन्त सैनिकों के दल रवाना किए गए।

सलीम ने उन्हें रामप्रसाद के करीब पहुंचते देखा। जब वे भाले उछाल-उछालकर हाथी को छेड़ने लगे तो सलीम ने तरकश से तीर निकालकर निशाना साधा।

रामप्रसाद ने सूंड फटकारी। दो सैनिक जमीन पर उछल गए।

ठीक तभी सलीम का तीर छूटा और सन् से हाथी के खुले मुंह में धंस गया।

रामप्रसाद जोर से चिंघाड़कर पीछे हटा। ऊपर बैठा राजाराम शाह गिरते-गिरते बचा। क्या हुआ था, यह समझते उसे देर न लगी।

रामप्रसाद लहूलुहान मुंह लिए लड़खडा रहा था। राजाराम नीचे कूद गया।

दूसरे ही क्षण वह मुगल सैनिकों से घिर गया। ढाल पर वार बचाता और दाहिने हाथ से दुश्मनों को मारता व घायल करता हुआ वह व्यूह तोड़ने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा था। रामप्रसाद का विशाल शरीर जमीन पर लुढ़का। राजाराम का पैर उसके पेट के नीचे दबते-दबते बचा। तभी एक भाला उसकी ढाल पर इतनी जोर से पड़ा कि उसमें छेद हो गया।

राजाराम वार संभाल न पाया। भाले समेत ढाल एक ओर उछल गई।

मौत अब सामने दिखाई दे रही थी लेकिन राजाराम डरने की बजाय उत्साह से भर गया और दूनी गति से तलवार चलाने

लगा। झन्न ! झन्न ! खटाक !

अकेला राजाराम सैकड़ों को कैसे हराता ? उसके बेटे मदद के लिए आना चाहते थे लेकिन दुश्मनों ने उन्हें दूर ही छेक रखा था। उन्होंने अपनी आंखों के सामने पिता को बोटी-बोटी कटते देखी।

घायल हाथी रामप्रसाद जमीन पर पड़ा बुरी तरह हांफ रहा था। दर्द के कारण उसकी आंखें लाल हो गई थीं। उसके मुंह में लगा तीर बाहर निकाल लिया गया था, पर इस हंगामे में दवा का कोई प्रबन्ध होना असम्भव था।

"जय मेवाड़ ! जय एकलिंग !" नारे लगाकर राजाराम शाह के वीर बेटे दुश्मनों पर टूट पड़े और अगले ही क्षण चारों ओर से घेर लिए गए। एक के बाद एक वे मौत के घाट उतरने लगे—आजादी की देवी को उनके खून की जरूरत थी।

माना झाला और राणा प्रताप चाहकर भी उनकी मदद नहीं कर सकते थे। वे भी शत्रुओं से बुरी तरह घिरे हुए थे।

"मानसिंह की कायरता तो देखो। अपना हाथी सामने लाकर हमसे युद्ध करने की बजाय वह सैनिकों की मजबूत आड़ लिए हुए है।"

माना झाला लड़ते जा रहे थे और राणा से कहते जा रहे थे, "आप अचानक सलीम की ओर झपटिए। उसके सैनिक असावधान हैं। वे समझते हैं कि आप मानसिंह को छोड़कर सलीम पर हमला नहीं करेंगे। सलीम को मार डालिए ! मैं आपके साथ हूं।"

राणा प्रताप को प्रस्ताव जंच गया। दोनों वीर राजपूतों ने अचानक पैंतरा बदला और सलीम के हाथी गजमुक्ता की ओर झपटे।

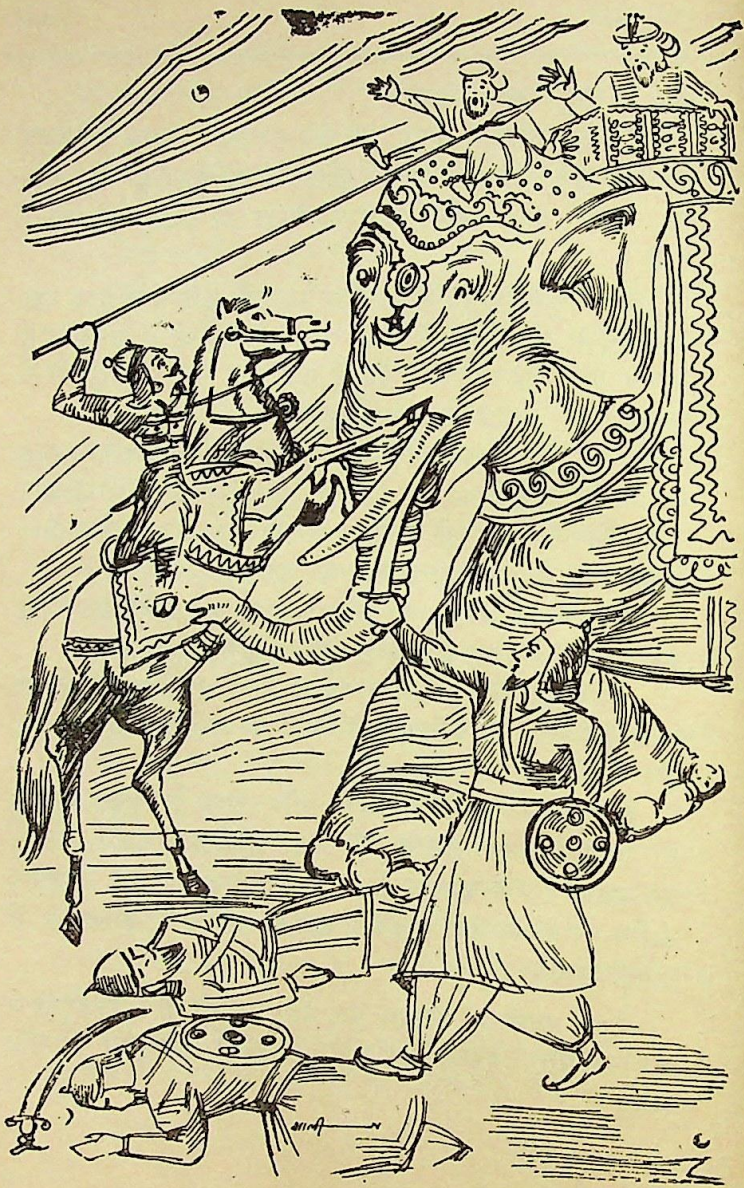

चेतक को सामने देखते ही गजमुक्ता चिंघाड़ा और सूंड फटकारने लगा। सलीम ने भौंहें सिकोड़ीं, राणा प्रताप की खूनी आंखों और ताकतवर बाहों का इरादा वह भांप गया था।

सहसा चेतक उछला।

सलीम अपनी आंखों पर विश्वास न कर पाया। चेतक के अगले पैर गजमुक्ता के माथे पर टिके हुए थे और राणा के हाथों में भाला तुल रहा था।

सलीम की छाती को ताककर राणा ने भाला फेंक दिया। उसी समय चेतक की गर्दन के नीचे गजमुक्ता की सूंड का झापड़ पड़ा।

चेतक उलटते-उलटते बचा। वह जोर से हिनहिना उठा। गजमुक्त की सूंड में तेज कटार बंधी हुई थी जिसने चेतक की गर्दन का मांस उधेड़ लिया।

सलीम बाल-बाल बचा। ज्योंही भाला उछला, सलीम सांप जैसे स्फूर्ति से हौदे में लेट गया। भाला सिर के ऊपर से-निकला और हौदे की छत से टकराकर जमीन पर उछल गया।

"टूट पड़ो !' वह चीखा लेकिन उसके चीखने से पहले ही मुगल-सैनिक राणा पर झपट चुके थे।

चेतक की छलांग से गजमुक्ता अकबका गया था। अपनी जिन्दगी में उसे कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ था। वह इतनी तेजी से पीछे हटा था कि वार बचाने के लिए झुका सलीम हौदे में खिलौने की तरह इधर से उधर हो गया था।

माना झाला दंग थे। राणा प्रताप को इतनी चपलता से लड़ते कभी नहीं देखा था उन्होंने। लेकिन यह चपलता कब तक स्थिर रह पाएगी ? राणा के चारों ओर मुगलों का सागर लहरा

रहा था। मेवाड़ का यह वीर नायक क्या आज सदा के लिए सो जाएगा ?

नहीं, यह नहीं हो सकता !

माना झाला तलवार से रास्ता बनाते हुए राणा की ओर बढ़े। उन्होंने चेतक की ओर देखा जो घायल गर्दन के कारण विकल हो रहा था लेकिन स्वामी का पूरा साथ दे रहा था।

माना झाला के दिमाक में एक कौंध हुई—

'चेतक की पीठ पर चमड़े के पट्टों के सहारे मेवाड़ का झण्डा खड़ा किया गया है जो काफी दूर से दिखाई पड़ रहा है। इसी झण्डे के कारण तो राणा के चारों ओर मुगलों की संख्या बढ़ रही है। यदि इस छात्र को मैं अपने मस्तक पर धारण कर ले तो ? तो दुश्मन समझेंगे कि मैं ही राणा प्रताप हूं। वे मुझे घेर लेंगे। राणा बच जाएंगे।'

उसे अपनी ओर बढ़ते देखकर राणा चिल्लाए, "झाला ! दूर रहो ! यहां मारे जाओगे।"

लेकिन मारे जाने से कभी कोई राजपूत डरा है ? माना झाला ने एड़ लगाई। अब उनका घोड़ा ठीक चेतक की बगल में था। उन्होंने हाथ बढ़ाकर राणा के मस्तक से मेवाड़ के राज्य-चिह्नों को अपने सिर पर धारण करने की चेष्टा की।

"झाला ! पागल हुए हो ?" राणा चीखे।

मुगलों का नारा उठा, "अल्ला हो अकबर !"

राणा का ध्वज तथा राज्यचिह्न माना झाला के मस्तक पर लग चुके थे। जिन मुगल सैनिकों ने यह काण्ड देखा था, उन्हें माना झाला की तलवार पृथ्वी से विदा कर चुकी थी।

"मारो ! मारो राणा को !" मुगलों ने झाला को घेर लिया।

झाला ने राणा की ओर अन्तिम मुस्कान फेंकी और जझ

गए। झण्डा फहराते हुए, लड़ते और हुंकारते हुए वीर झाला राणा से दूर भाग रहे थे—ज्यादा-से-ज्यादा दूर ताकि राणा पर कोई खतरा न रहे···

राणा ने गहरी सांस ली। माना झाला अब जीवित नहीं बच सकते थे, लेकिन···

९

ओ नीले घोड़े के सवार

ऊपर से लुढ़काने के लिए बची सारी शिलाएं नीचे ठेल दी गई। २१ जून, १५७६ के खूनी दिन की दोपहर बीत चुकी थी। दोपहर मेवाड़ के लिए जीत लेकर आई थी लेकिन उसके बाद के समय ने मुगलों का साथ दिया था। २२ हजार राजपूतों में से लगभग ६ हजार मारे जा चुके थे। जो बचे थे, वे थकान से अधमरे हो रहे थे।

मुगलों के मारे गए सैनिकों की संख्या ५ हजार थी। अगर युद्ध जारी रखा जाता तो अधमरे राजपूतों में से अधिकांश मौत के घाट उतर जाते। मुगल-सैनिक उनकी तुलना में आधे भी नहीं थके थे क्योंकि संख्या में दुगने होने के कारण उन्हें ज्यादा परिश्रम नहीं करना पड़ा था।

राणा ने चेतक की पीठ थपथपाई । चेतक हिनहिनाया । तसल्ली की कोई जरूरत नहीं थी ।

माना झाला के पीछे भाग रहे सैनिकों के बीच से रास्ता बनाकर बाहर निकल आना राणा के लिए मुश्किल नहीं था । मेवाड़ के राजपूतों का जो दल सबसे करीब था, राणा उसी में शामिल हो गए ।

तुरही बजाकर मैदान से जंगल में चले जाने का इशारा कर दिया गया । इसके सिवा और कोई चारा न था । अगर तुरही न बजती तो एक-एक राजपूत मैदान में खप जाता, पर इससे कोई फायदा न था । मर-खप जाने के बाद मेवाड़ पर मुगलों का अधिकार स्थायी हो जाता ; लेकिन अगर राजपूत जीवित रहें तो वे फिर से विद्रोह की मशालें जलाकर गुलामी का अन्धकार दूर कर सकते थे ।

घायल चेतक राणा प्रताप को लेकर हल्दी घाटी से दूर दौड़ रहा था । गर्दन के नीचे से तथा दूसरे घावों से इतना खून रिस चुका था कि उसकी शक्ति अब आधी भी नहीं थी लेकिन दौड़ने में उस स्वामीभक्त जानवर ने कोई कमी न रखी ।

शाम अभी घिरी नहीं थी । सूरज पश्चिम की ओर से करीब डेढ़ बांस ऊपर चमक रहा ।

राणा ने पीछे मुड़कर देखा तो चौंक गए । दो मुगल घुड़-सवार चेतक का पीछा कर रहे थे । 'क्या इन्होंने मुझे पहचान लिया ?' चेतक में इतना दम नहीं था कि सामना करने लायक स्फूर्ति अपनी टांगों में भर सकता । तब ?

राणा ने चेतक को थपथपाकर एक पगडंडी पर मोड़ दिया । पेड़-पौधे तेजी से पीछे भाग रहे थे । घुड़सवार लगातार पीछा कर रहे थे ।

चेतक झटके के साथ रुक गया और अगले दोनों पैर उठाकर उछला। सामने एक पहाड़ी पर नाला आ गया था। कितना गहरा है यह? राणा ने नाले को पहचानने की कोशिश तो की लेकिन थकान से झनझनाते दिमाग और जलती आंखों ने साथ न दिया।

जंगल इतना घना था कि चेतक उनके बीच से रास्ता नहीं बना सकता था। पीछे से नंगी तलवारें लिए मुगल आ रहे थे। केवल एक ही रास्ता बचता था—चेतक जल्दी-से-जल्दी नाले को पार करे।

उसी समय पीछे से आवाज आई, "ओ नीले घोड़े के सवार!"

परिचित स्वर!

कौन है यह?

राणा ने शंका से पीछे देखा—शक्तिसिंह!

हां, वह शक्तिसिंह ही था। वह बड़ी तेजी से नाले की ओर बढ़ रहा था। दोनों मुगलों के घोड़े उसके आगे-आगे दौड़ रहे थे। उन्होंने चिल्लाकर शक्तिसिंह से कहा, "राणा भाग रहा है! पकड़ो!"

राणा प्रताप ने होंठ काटे। दो मुगल तो थे ही, तीसरा शक्तिसिंह भी उनसे आ मिला!

चेतक हांफ रहा था। उसकी आंखें पीड़ा और थकान में फट रही थीं। "चल मेरे बेटे!" राणा ने उसकी गर्दन थपथपाई और उसे जरा पीछे लिया। अगले ही क्षण चेतक तीर की तरह नाले की दिशा में दौड़ पड़ा। उसके कदम आत्मविश्वास से भरे हुए थे। उसकी एक-एक रग तन रही थी, एक-एक पुट्ठा जोश से थिरक रहा था। उसकी दुम उत्तेजित होकर ऊपर उठ गई थी।

इस बार नाले के कगार पर पहुंचते ही वह जोर से हिन-हिनाया और उछलकर उस पार चला गया ।

छलांग लगाकर चेतक नाले के उस ओर गिरा ही था कि राणा प्रताप ने उसे एक झाड़ी की ओट में ले लिया ताकि मुगलों या शक्तिसिंह द्वारा कटार आदि का वार न हो सके । झाड़ी चेतक को मुश्कल से ओट दे पाई थी कि वह लड़खड़ाया और जमीन पर ढह गया। राणा कूदकर उसके नीचे उतर चुके थे । चेतक दम तोड़ रहा था, हमेशा के लिए विदा हो रहा था। राणा भावुक होकर उसके गले से लिपट गए, "चेतक ! जाना नहीं चेतक !" लेकिन उनके प्रिय घोड़े की गर्दन लटक चुकी थी। जिन्दगी की आखिरी सिहरन उसकी रगों में लहराकर मौत के साए में रेंग गई।

राणा की आखें छलक आईं । चेतक की लाश पर दो गर्म आंसू ढलकाकर वह उठने की कोशिश करने लगे। पांव सुन्न हो गए थे। उन्होंने तलवार की मूंठ पकड़नी चाही लेकिन उंगलियों ने साफ जवाब दे दिया ।

क्या मेवाड़ का यह सिंह अन्तिम समय में केवल तीन दुश्मनों से भी लड़ नहीं पाएगा ? क्या बिना लड़े ही उसका सिर उतर जाएगा ?

"महादेव एकलिंग ! मुझे शक्ति दो !" राणा ने इष्टदेव को याद किया। झाड़ी की टहनियां हटाकर उन्होंने नाले के उस पार देखा। दोनों मुगलों के घोड़े किनारे पर ही रुक गए थे । मुगल उन्हें नाला पार करने के लिए उकसा रहे थे लेकिन वे दुम दबाए खड़े थे।

शक्तिसिंह कहां है ?

राणा ने मुगलों के पीछे-पीछे पगडण्डी पर नजर दौड़ाई ।

शक्तिसिंह का घोड़ा धूल उड़ाता हुआ आया और मुगलों के घोड़ों के पास रुक गया। शक्तिसिंह ने तलवार खींच ली ।

एक मुगल ने अपनी तलवार से झाड़ी की ओर इशारा किया, "राणा घायल होकर उसके पीछे..."

वाक्य पूरा भी न हुआ था कि खच्च से शक्तिसिंह ने उसका सिर काट लिया। उसे चीखने का भी मौका न मिला। कटा सिर गेंद की तरह उछलकर नाले में जा गिरा ।

राणा को अपनी आंखों पर विश्वास न आया—शक्तिसिंह ने, राणा प्रताप और स्वतन्त्र मेवाड़ के दुश्मन शक्तिसिंह ने अपने ही सैनिक का गला उतार लिया !

दूसरा मुगल हतप्रभ रह गया था। एक क्षण को वह समझ ही न पाया कि उसने क्या देखा; फिर उसने आगे बढ़कर शक्तिसिंह पर वार करना चाहा लेकिन तब तक उसका सिर भी उतर चुका था।

शक्तिसिंह ने तलवार का खून मुगलों के कपड़ों से पोंछा। फिर कपाल पर उभर आए पसीने को एक उंगली से निचोड़ कर टपकाया और गहरी सांस ली। पीछे मुड़कर उसने दूर तक नजर दौड़ाई, कहीं कोई और तो नहीं आ रहा है। फिर नाले के उस पार की झाड़ी की ओर मुंह करके हांक लगाई, "ओ नीले घोड़े के सवार ! पीली धूल के राजा !"

एक क्षण के लिए राणा का मन हुआ कि ओट से बाहर निकल आएं और कह उठें, 'भैया !' लेकिन उन्होंने अपने को रोका—कहीं यह भी शक्तिसिंह की चाल न हो। उसने मुगलों को शायद इसलिए मारा हो कि प्रताप को अपने ही हाथों से मौत के घाट उतारकर बादशाह अकबर से वाहवाही लूटे ।

शक्तिसिंह ने घोड़े को एड़ लगाई और पानी में कूदकर आगे

बढ़ने लगा । राणा ने तलवार की मूंठ पर थकी ऊंगलियों को भींचा और फुसफुसाए, "जय एकलिंग !"

शक्तिसिंह मुस्कराया । उसने अपनी तलवार एक ओर फेंक दी, कटार और भाला भी फेंक दिया और घोड़े से उतरकर बोला, "मुझे मारना चाहते हो भैया ? लो, मारो !" वह सिर झुकाकर खड़ा हो गया ।

राणा की आंखें भर आईं । "भैया !" कहकर वह दौड़े और शक्तिसिंह से लिपट गए ।

दोनों की आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे ।

चेतक की लाश से लिपटकर शक्तिसिंह भी रोया । राणा ने गद्गद् स्वर में कहा, "शक्ति, माना झाला मारे गए, राजाराम शाह मारा गया, राजाराम के बहादुर बेटे मारे गए । अब तुम वापस मत जाओ । हम दोनों मिलकर फिर से मेवाड़ की स्वाधीनता के लिए मुगलों से लड़ेंगे !"

शक्तिसिंह ने डबडबाई आंखें भाई की ओर उठाईं, "अगर पिंजरे का गुलाम तोता किसी तरह उड़ भी जाय तो आजाद तोते उसे अपने दल में शामिल नहीं करते । चोंच मार-मार कर उसकी जान ले लेते हैं ।"

"तुम कहना क्या चाहते हो, शक्तिसिंह ?"

"मुगलों से मिलकर मैं प्रसन्न तो नहीं हूं, लेकिन मैं वापस मेवाड़ कैसे आ सकता हूं ? हो सकता है, आपके सामने कोई मुझसे कुछ न कहे लेकिन आपके पीछे कोई भी मुझ पर व्यंग्य कर सकता है ।"

शक्तिसिंह ने अपना घोड़ा राणा को दे दिया ताकि वह सुरक्षित स्थान तक जा सकें और स्वयं नाले में कूदकर तैरता हुआ उस पार चला गया । राणा अपलक उसी ओर देखते रहे ।

उन्हें आशा थी कि वह वापस मुड़कर एक बार जरूर देखेगा, लेकिन उसने एक बार भी न देखा और पगडण्डी के मोड़ पर पहुंचकर ओझल हो गया मानो कभी आया न हो।

१०
गोगुन्दा पर कब्जा

रात हुई। जीत की खुशी के नगाड़े बजाते और नाचते मुगल-सैनिकों ने मशालें जला लीं। खूनी कीचड़, धूलधूसरित लाशों और कटकर पड़े सिरों, हाथों-पैरों आदि के कारण भयंकर युद्ध-भूमि वीभत्स हो उठी थी।

जमादारों के दल सफाई के लिए रवाना कर दिए गए थे जो बेशर्मी से गालियां बक रहे थे। हर दल के साथ एक-एक गाड़ी थी जिसे घोड़े हांक रहे थे। बिखरी हुई हड्डियों, कटे पड़े अंगों, मनुष्यों और जानवरों की लाशों आदि को उठा-उठाकर गाड़ी में ठूंसा जा रहा था।

मुगलों के हकीम ने घायल रामप्रसाद के मुंह में दवाएं लगाईं। रामप्रसाद हमला न कर दे, इस डर से उसे रस्सों से

जकड़ दिया गया था। मरहम-पट्टी का काम पूरा हो गया, तो उसके बन्धन खोल दिए गए। वह सूंड फटकारता और चिंघाड़ता हुआ उठ खडा हुआ।

ग्वालियर का वीर हाथी अब मुगलों की कैद में था। भालाधारी सैनिकों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। पीछे के सैनिकों ने भालों की नोकें चुभा-चुभाकर उसे आगे चलने पर मजबूर किया।

रामप्रसाद के विराट शरीर को देखकर सलीम की गरदन गर्व से तन गई उसके एक ही तीर से यह बलवान हाथी जमीन पर गिरकर फैल गया था।

राजा मानसिंह की ओर देखकर सलीम मुस्कराया, "जीत के नजराने के रूप में रामप्रसाद को बादशाह सलामत के पास भेज दिया जाए ?"

"बेशक !" मानसिंह मुस्कराया, "बादशाह सलामत देखकर खुश होंगे।"

दो दिनों में रामप्रसाद काफी ठीक हो गया। हकीम ने जांच करके कहा कि अब वह चल-फिर सकता है। अकबर उन दिनों फतहपुर सीकरी में था। रामप्रसाद के गले में लकड़ी का घण्टा बांधा गया, जिसे टनटनाता हुआ वह फतहपुर सीकरी की ओर रवाना हो गया। उसके आगे-पीछे सैनिकों के मजबूत दस्ते चल रहे थे क्योंकि चौबीसों घण्टे राणा प्रताप के छापेमार दलों तथा भीलों का खतरा बना रहता था। सुरक्षा के लिए स्वयं मानसिंह भी हल्दी घाटी से बत्तीस मील दूर तक रामप्रसाद के साथ गया था।

गोगुन्दा पर हमले की तैयारियां हो रही थीं। गोगुन्दा राणा प्रताप का महत्वपूर्ण किला था। अफवाह सुनाई पड़ रही थी कि

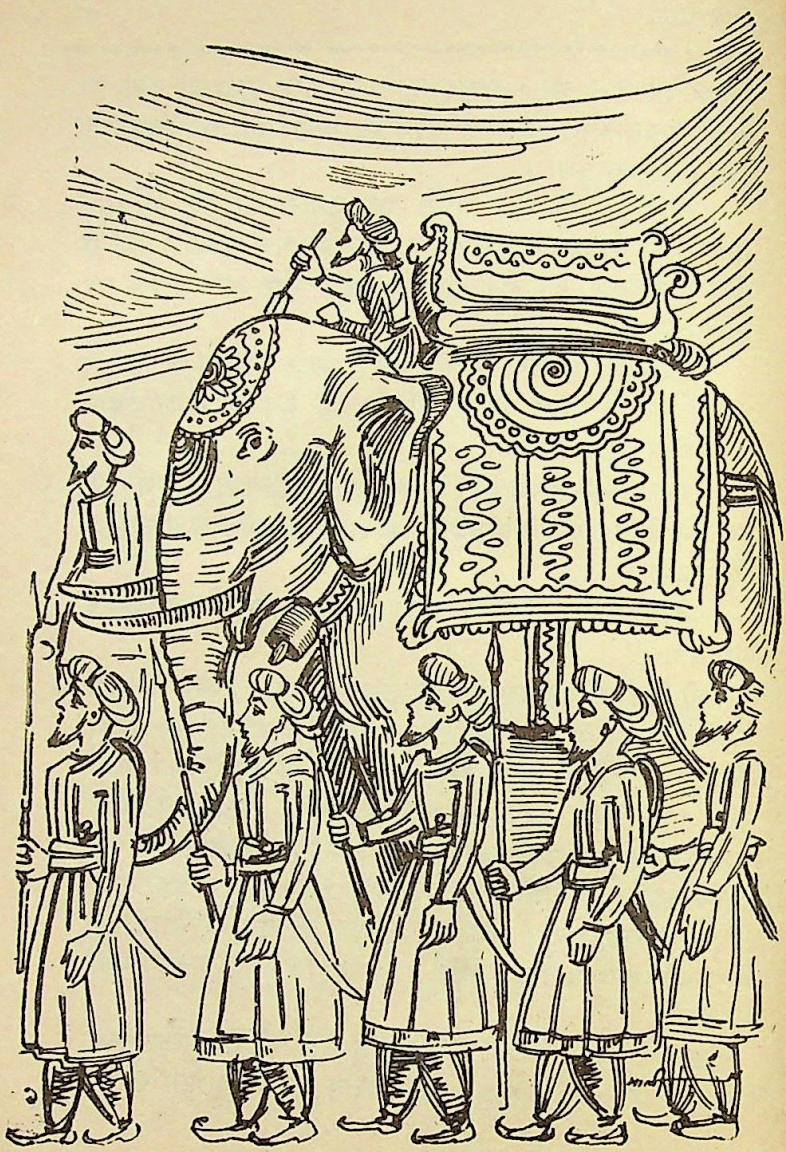

हारने के बाद राणा ने उसी में शरण ली है। उस पर हमला करने के लिए जरूरी था कि हल्दी घाटी को पार करके उस ओर निकला जाता। इसमें बड़ा खतरा था।

हल्दी घाटी के दोनों ओर की पहाड़ियों पर से भीलों ने चट्टानें लुढ़काकर मुगल-सेना में जो तबाही मचा दी थी, उस याद करते ही सैनिकों के रौंगटे खड़े हो जाते।

अन्त में सलीम और मानसिंह ने तय किया कि सैनिकों की टुकड़ियां दोनों पहाड़ियों का चप्पा-चप्पा छान मारें। अगर कोई ऐसी चट्टान दिखाई पड़े जो लुढ़काने के लिए साधकर रखी गई हो तो उसे घाटी में उतार दिया जाए!

चौकन्ने सैनिक चल पड़े। सचमुच ऐसी कई चट्टानें मिलीं जो नाममात्र के इशारे से ही घाटी में लुढ़क जातीं और सैनिकों की जान ले सकती थीं। "हट जाओ! सावधान!" पहाडी के ऊपर से सैनिक चिल्लाते और झांककर नीचे देखते कि कोई है तो नहीं।

बारीकी से जांच-पड़ताल करने के बाद चट्टान के नीचे भाले डाले जाते और मूंठ पर झटके देकर चट्टान लुढ़का दी जाती।

जब विश्वास हो गया कि अब खूनी चट्टानों का भय नहीं रहा तो शोर मचाती मुगल-सेना हल्दी घाटी पार करने लगी। सेना के अधिकारियों की आंखें हर समय पहाड़ियों की ओर लगी रहतीं—कहीं ऐसा न हो कि प्रताप के गुप्त दस्ते ऊपर से तरी

बरसाने लग···

जगह-जगह हड्डियों के ढेर पड़े थे। कई लाशें उठाने को रह गई थीं जिन्हें गिद्ध, चील, कौए आदि नोच रहे थे। डरपोक कौए सैनिकों को देखकर उड़ जाते और कांय-कांय करने लगते। चीलें कम डरपोक थीं। कुछ उड़कर मंडराने लगतीं, कुछ लाशों पर ही जमी रहतीं। गिद्ध बिल्कुल डरपोक नहीं थे। वे पास से गुजरते सैनिकों को बड़ी लापरवाही से देखते और तसल्ली के साथ लाशें नोचने लगते। कई लाशें बुरी तरह सड़ गई थीं। उनके आसपास की हवा घिनौनी बू से भरी हुई थी।

मानसिंह का हाथी शान से आगे बढ़ रहा था। सहसा किसी कौए के मुंह से हड्डी छूटी और ठीक मानसिंह के सामने आ पड़ी। चंवर डुलाते सेवक ने तुरन्त उसको उठाकर नीचे फेंक दिया।

उदास मानसिंह ने गहरी सांस ली—यह हड्डी किसी राजपूत की होगी···गुलामी कितनी बुरी है! मैं खुद राजपूत होकर राजपूतों को मार रहा हूं।

घाटी कुशल से पार कर ली गई। गोगुन्दा का किला सामने उभर रहा था। उसके आसपास छाई खामोशी दूर से रहस्यमय लग रही थी, साथ ही डरावनी भी।

सलीम ने अपना हाथी मानसिंह के हाथी की ओर बढ़ाते हुए कहा, "गोगुन्दा का किला ज्यादा बड़ा नहीं हैं। मैं सोचता हूं, बिना लड़े ही राजपूत दरवाजे खोल देंगे।"

मानसिंह हंसा, "यह क्यों भूलते हैं कि गोगुन्दा के भीतर राणा प्रताप हाजिर हो सकते हैं? उनके रहते कोई राजपूत कायरता पर नहीं उतरेगा।"

"कोई बात नहीं," सलीम ने जवाब दिया, "हम सबको

काटकर फेंक देंगे। शायद राणा गिरफ्तार भी हो जाए ।"

मानसिंह चुप रहा ।

कुछ देर बाद सेना को बढ़ने से रोक दिया गया। अधिकारियों ने मोर्चे के हिसाब से अपनी-अपनी टुकडियों को अलग-अलग दिशाओं में बढ़ाना शुरू किया। गोगुन्दा को घेरा जा रहा था। उसके उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम—चारों दिशाओं में टुकड़ियां फैल गईं।

रात हो चली थी।

कुछ समय के लिए सैनिको को आराम दिया गया । उसके बाद उन्होंने हल्का नाश्ता किया क्योंकि भरपेट खाना खाने पर उनकी फुर्ती कम हो जाती। गोगुन्दा का घेरा रातों-रात कस देने का इरादा पक्का किया जा चुका था। नाश्ते के साथ थोड़ी-थोड़ी शराब भी दी गई, जिससे उनकी रंगों में नया जोश भर गया। उनके दाढ़ी वाले चेहरे रात के अंधेरे में खौफनाक लग रहे थे। मशालें जल रही थीं। उनकी लौ सैनिकों की आंखों में चमक रही थी।

"बढ़ो !" एक साथ सभी सेनाधिकारियों ने अपनी टुकड़ियों को हुक्म दिया ।

गड़ड़ड़···गड़क् घम्·· गड़क् घम्···गड़क् घम्

नगाड़ों का शोर उभरा जो क्रमशः तेज होता गया । बीच-बीच में तुरही की आवाज गूंज उठती । बड़े-बड़े ढोल निर्दयता से धुने जाने लगे···

गिजगिजगिज···ढकाक्क्···ढकाक्क्

"अल्लाहो अकबर ! उत्तेजक संगीत से फड़ककर सैनिक चिल्ला उठते और तेजी से दौड़ने लगते ।

घेरे के किसी एक बिन्दु से नारा उठता जो गोगुन्दा के चारों

ओर छल्ले की तरह रेंग जाता ।

"हय !"

"आ ऽ ऽ ऽ !"

"हुम्म्···दौओड़ो···आ ऽ ऽ ऽ···!"

घोड़े हिनहिनाते, हाथी चिंघाड़ते । रथों के दौड़ने की घड़-घड़ाहट आकाश को भी सहमा देती ।

घेरा कहां कितना कस गया है, इसका पता उन मशालों से लगता था, जो सैनिकों की हर टुकड़ी के पास एक-एक थी । हर चार टुकड़ियों के बीच में ऊंटों पर उत्तेजक बाजों वाले बैठे थे—गिजगिजगिज···ढकाक्क्···ढकाक्क्···

जैसी कि सबको आज्ञा दी गई थी, कुछ देर बाद सारी मशालें बुझा दी गईं ।

अब गोगुन्दा के भीतर के राजपूतों को ठीक-ठीक पता न चल सकता था कि घेरा कहां तक आगे आ गया है । हिनहिनाते घोड़ों आदि की आवाजें बहुत ही धोखेबाज थीं । कभी लगता कि घोड़े एकदम पास हिनहिना रहे हैं, कभी लगता, वे काफी दूर हैं । सैनिकों ने चिल्लाना, हुंकारना भी एकदम बन्द कर दिया था ।

जोश दिलाने वाले वाद्य भी खामोश थे, क्योंकि खुद खामोशी ही अब बेहद जोशीली हो उठी थी ।

अंधेरे में मुगलों की तोपें जमाई जाने लगीं । हल्दी घाटी में इन तोपों का कमाल नहीं दिखाया जा सका था । वहां भारी-भरकम तोपों को आगे लाकर जमाना और निशाने लेना असंभव ही था । यदि असम्भव को सम्भव किया जाता तो भी पहाड़ियों के ऊपर से लुढ़कती चट्टानें तोपों के मुंह इधर-उधर कर

देतीं। मुगल तोपचियों को जमकर युद्ध करने का मौका ही न मिला था।

घेरा डालने में रात बीत गई। पूरब में जब थोड़ी-थोड़ी रोशनी फूटनी शुरू हुई तो मुगलों की एक तोप ने धांय से पहला गोला उगल दिया।

जोर का धमाका हुआ। आग की बहुत बड़ी जीभ अन्धेरे में लपलपा गई। हवा में कंपकंपी की लहरें तैरने लगीं। घाटी देर तक थर्राती रही। बारूद की तीखी बू चारों ओर फैल गई।

गोला उछलकर किले के भीतर गिरा और सर्वनाश फैलाता हुआ फटा।

अगले ही क्षण गोगुन्दा की तोपें भी गरज उठीं—धड़ाम! धांय!

धुआं···बारूद की गंध···घायलों की कराहटें···

बीच-बीच में गोलाबारी रुकती तो नगाड़े, तुरही आदि का शोर उभर आता।

सुबह हुई।

दोनों ओर से सांय-सांय तीर छुटने लगे। राजपूतों के तीर किले की दीवार से नीचे की तरफ जाते थे, अतः उनमें भरपूर तेजी थी। मुगलों के तीर नीचे से ऊपर जाते थे। उनमें उतनी तेजी न आ पाती थी। लेकिन मुगलों के तीरों के फल जहर से बुझे हुये थे। उनसे लगी छोटी-सी खरोंच भी जान ले लेती थी।

राजपूतों के पास उतने अच्छे जहर-बुझे तीर नहीं थे। उन्हें तो अपनी बाहों पर विश्वास था जो धनुष की प्रत्यंचा को कान तक खींच-खींचकर टंकार रही थीं।

लेकिन जैसी कि सलीम को आशा थी गोगुन्दा का पतन होने में ज्यादा देर न लगी। दोपहर होते-होते उसका दरवाजा खोल दिया गया और बचे खुचे राजपूत बाहर निकल पाये। वे केसरिया बानों में थे—लहू से तर! जब तक उनके सिर धड़ से जुदा न हो जाते थे, वे दुश्मनों को काटते रहते थे। वे पागलों की भांति चीख रहे थे।

उत्तेजना से राजपूत योद्धाओं की आंखें फैल गई थीं। उनके घोड़ों में कमाल की फुर्ती थी। घाव लगने पर गिरते-गिरते भी वे दो-चार को घायल कर देते। मौका मिलने पर वे दुश्मनों का मांस उतार लेते और फड़कते हुए उछल पड़ते।

सलीम ने मानसिंह की ओर देखा, "जब राजपूतों को मालूम है कि वे जरूर हारेंगे तो ख्वाहमख्वाह अपनी जान क्यों देते हैं?"

मानसिंह मन ही मन गर्व से हंसा, बाहर से गम्भीर बना रहा।

राणा प्रताप गोगुन्दा में नहीं थे, क्योंकि होते तो युद्ध में अवश्य सामने आते। जब राजपूतों की आखिरी टोली भी कट-कटकर टुकड़ों में बदल गई, तब मुगलों ने किले में प्रवेश किया।

मानसिंह ने दूत भेजकर पता लगवाया कि किले में जौहर हुआ है या नहीं।

दूत ने वहां से लौटते ही सूचना दी कि जौहर नहीं हुआ है। स्त्रियों को पहले ही कहीं और पहुंचा दिया गया था। बच्चे, बूढ़े तथा रोगी भी उनके साथ चले गये थे।

घायल सैनिकों की तीमारदारी का इन्तजाम किया गया।

गोगुन्दा में चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों और चूहों आदि के सिवा कोई नहीं था, जो सैनिकों का स्वागत करता या उन्हें कोई काम करने से रोकता ।

"आका हुजूर !" दूत ने सलीम के सामने जाकर कोरनिश बजाई, "गोगुन्दा के किसी भी कुंए का पानी पीने के लायक नहीं है । राजपूतों ने मरने से पहले सभी कुओं में कूड़ा-करकट डालकर पानी गंदा कर दिया है । हमारा पानी खत्म हो चला है । सिपाही प्यास से तड़प रहे हैं ।"

समस्या सचमुच ही गम्भीर थी । इतनी बड़ी फौज के लिए पानी का बन्दोबस्त कैसे किया जायेगा ?

कई घुड़सवार टुकड़ियां उसी क्षण आसपास के कस्बों और गांवों की ओर रवाना कर दी गईं । हर सवार के पास मशक थी ।

लेकिन ये छोटे-छोटे कुएं आखिर कब तक इतनी बड़ी फौज की प्यास बुझाएंगे ? चार-पांच दिनों में ही वे खाली हो जाएंगे ।

तब ?

आसपास कुछ झरने थे जरूर, लेकिन वहां सशस्त्र भीलों की टोलियां मंडरा रही थीं ।

मानसिंह बोला, "सांप-छछून्दर वाली दशा है । न उगलते बनता है, न निगलते ।"

सलीम ने भौंहें सिकोड़ीं, "मैं तो समझ नहीं पाता कि राणा का दिमाग कहां तक दौड़ सकता है । मानो वह पहले से जानता था कि हमला होगा और हमले में उसकी हार होगी । इसी से उसने मेवाड़ को उजाड़ दिया । अब बताइए, हम यहां रुककर क्या करें ? पानी के लिए निकट झरनों की ओर बढ़ते हैं तो भीलों के तीर बरस पड़ते हैं ; फलों के लिए जंगल में घुसना

चाहते हैं तो राजपूतों की नगी तलवारें दिखाई पड़ती हैं। एक फल के लिए एक सिर तो नहीं दिया जा सकता।"

रामप्रसाद फतहपुर सीकरी पहुंच गया था। बादशाह अकबर ने उसे बहुत पसन्द किया था, लेकिन इस जीत से उसे ज्यादा खुशी नहीं हुई थी। उसने मानसिंह के नाम सन्देश भिजवाया, "हमें बड़ा अफसोस है कि आप के रहते हुये भी राणा प्रताप जीवित रह गया। हल्दी घाटी में हमारी जीत हुई, यह बेशक खुशी की बात है, लेकिन अधूरी जीत के बहुत ज्यादा मायने नहीं होते। हम जीत के साथ-साथ प्रताप का सिर भी चाहते हैं।"

सन्देश से स्पष्ट झलक रहा था कि अकबर को मानसिंह पर राजपूतों के प्रति पक्षपात का शक है, हालांकि मानसिंह पूरी ईमानदारी से लड़ा था। बात चुभ जानी स्वभाविक थी।

हल्दी घाटी में राणा प्रताप की हार के समाचार आग की तरह चारों तरफ फैल गए थे; लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि इससे राजपूतों में निराशा फैलने के बजाय जोश भड़क उठा था।

मुगल गुप्तचर अक्सर समाचार लाते कि विद्रोह की तैयारियां हो रही हैं। माना झाला और राजाराम शाह ने जिस गौरव से वीरगति प्राप्त की थी, उससे अनेक राजपूत सामन्तों के भीतर बगावत के अंगारे दहकने लगे थे।

सलीम और मानसिंह बड़े चक्कर में पड़े। चारों ओर विद्रोह की छिपी तैयारियां तो हो ही रही थीं, लेकिन खुला विद्रोह कहीं नहीं हुआ था। यह तय करना बड़ा मुश्किल था कि सेना को

किधर रवाना किया जाए।

फिर कहीं पर खुला विद्रोह हो जाए, तो भी सेना रवाना करना खतरे से खाली नहीं था। मानसिंह और सलीम अच्छी तरह जानते थे कि ज्योंही सेना गोगुन्दा छोड़ेगी, राणा प्रताप उस पर छापा मार देंगे।

मुगल-सेना ने आगे बढ़कर उदयपुर के मुख्य किले तथा आसपास के दूसरे किलों पर भी अधिकार जमा लिया। राणा प्रताप की तलाश करने के लिए चारों ओर गुप्तचर रवाना कर दिये गए। कभी समाचार आते कि राणा इस पहाड़ी में छुपे हैं और कभी पता चलता कि उस पहाड़ी में। नंगी तलवारें लिए मुगल सैनिकों के दल पहाड़ियों को रौंद डालते, लेकिन प्रताप का कहीं आभास तक न मिल पाता!

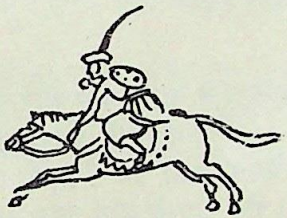

११

सूरज पश्चिम में निकलेगा ?

राणा प्रताप कन्दरा से बाहर आए और चारों ओर सतर्क दृष्टि से देखने लगे। उनका तेजस्वी चेहरा दुर्बल लग रहा था लेकिन आंखों की चमक वैसी की वैसी थी। भरी-भरी मूछें ऊपर उठी हुई थीं। रोएं-रोएं से शौर्य टपक रहा था।

प्रताप का बड़ा बेटा अमरसिंह कन्दरा की दीवार से टिककर बैठा था। उसे कड़ाके की भूख लगी थी। वह रह-रहकर चूल्हे की ओर देख लेता था।

यह पांचवाँ चूल्हा था।

यह पांचवी कन्दरा थी।

कितना संघर्षमय हो गया था जीवन ! खाना पांचवीं बार बनाया जा रहा था।

सुबह पहली बार चूल्हा जला और खाना पका था। भोजन परोसे जाने की तैयारियां हो ही रही थीं कि एक सेवक ने हांफते हुए कन्दरा में प्रवेश किया था और सूचना दी थी, "महाराज, मुगल टुकड़ी तेजी से इस दिशा में बढ़ रही है।"

पका-पकाया भोजन धरा रह गया था और सब भागने की तैयारियां करने लगे थे।

एक घण्टे बाद उन्होंने दूसरी गुफा में शरण ली थी। राणा प्रताप की रानियों ने फिर से खाना पकाया था और परोसकर सबके सामने रखा था। अभी मुश्किल से दो-एक कौर भरे गए थे कि फिर से सैनिक हड़बड़ाया हुआ भीतर आया; बोला, "महाराज, भागिए! दुश्मनों को इस गुफा का भी पता चल गया है।"

महाराणा के छोटे-छोटे बच्चों को जब थाल के सामने से उठाया गया तो उनकी आंखें छलछला आईं। कल रात भी उन्हें खाना नहीं मिला था, बड़े जोर की भूख लगी थी। बेचारे बच्चे बिलखकर रो भी तो नहीं सकते थे क्योंकि बिलखने पर दुश्मनों के सुन लेने का भय था। चुपके-चुपके आंसू टपकाना वे अपने-आप सीख गए थे।

"चलो बेटे, चलो बेटी, किसी और गुफा में चलो! वहां हम फिर से खाना खाएंगे, अच्छा?" राणा प्रताप ने कांपते हाथों से उनकी पीठ थपथपाई और उन्हें सेवकों के साथ घोड़ों पर बैठा दिया।

तीसरी गुफा में पहुंचकर तीसरी बार खाना पकाया गया लेकिन इस बार भी···हां, इस बार भी पका खाना ज्यों का त्यों छोड़कर भाग जाना पड़ा। दुश्मनों की टोली इस गुफा की दिशा में भी बढ़ रही थी।

जब तक ये चौथी गुफा ढूंढते, दोपहर ढल चुकी थी। राणा प्रताप और राजकुमार अमरसिंह तो पेट की आग सह कर

सकते थे लेकिन यह नन्हें-नन्हें बच्चों के बस की बात नहीं थी। राणा की रानियां, जिन्होंने कभी मखमल-बिछे फर्श से बाहर कदम न रखा था, आज पथरीली, जंगली पगडंडियों पर भटक रही थीं, दर-दर की ठोकरें खा रही थीं। भूख सहन करना उनके भी बूते की बात नहीं थी।

फिर आज विधाता जैसा मजाक कर रहा था, वह तो और भी असहनीय था! तीन बार खाना पका, परोसा गया और खाया न जा सका! तीसरी बार तो राणा की एक बच्ची ने जलते हुए भात में हाथ डाल दिया था, जिससे बेचारी की उंगलियों में छाले पड़ गये थे।

चौथी गुफा में पहुंचते ही रानियों में से एक ने कहा, "इस बार खाना पकाया ही न जाए तो अच्छा रहे, क्योंकि शत्रु तो यहां भी आ पहुंचेंगे। हमारे पास जो चावल था, वह भी तो तीन बार पकने के बाद बहुत कम बचा है।"

व्यंग्य का तीखा बाण छोड़ा गया था, लेकिन राणा उसे एकाएक न समझ पाये; बोले, "लेकिन रानी, हमारे बच्चे बहुत भूखे हैं।"

"बच्चे आपके कहां हैं?" रानी ने आखिर कह ही दिया, "बच्चे तो आपकी रानियों के हैं। आपके होते, तो आप उनकी सुख-सुविधा का खयाल न रखते?"

अब राणा की समझ में असली बात आई। वह रानी की ओर देखते ही रह गए। किसी तरह बोले, "तुम्हीं बताओ रानी, तुम लोगों के आराम के लिए मैं क्या करूं?"

रानी चुप रही।

राणा कहते गए, "मैं आजादी की लड़ाई लड़ रहा हूं। जब सफलता मिलेगी तो राजमहल भी वापस मिल जायेंगे। दुःख के दिन किसी तरह गुजार लो।"

"गुजारना चाहें या न चाहें, गुजारने तो पड़ेंगे ही।" रानी ने फिर व्यंग्य किया।

राजकुमार अमरसिंह बीच में पड़ा, "जल्दी खाना पकाओ, भूख लगी है!"

रानी ने पत्थरों के तीन टुकड़े जमाकर चूल्हा बनाया और टहनियां सुलगाने लगी।

खाना बना। लेकिन इस बार तो परोसा भी न जा सका। दुश्मन की एक टोली इधर भी आ निकली और राणा को यह गुफा भी छोड़ देनी पड़ी।

और अब पांचवीं गुफा में, पांचवें चूल्हे पर, पांचवीं बार खाना पकाया जा रहा था।

लेकिन क्या इस बार खाने का अवसर मिलेगा?

शाम होने ही वाली थी। उदास सूरज धीरे-धीरे क्षितिज की ओर ढल रहा था।

चूल्हे पर रखा पानी खौलने लगा।

राणा प्रताप भारी हृदय के साथ कन्दरा से बाहर निकले और चारों ओर सावधानी से देखने लगे। पगडण्डी के मोड़ पर उन्हें अपनी ही सेना का एक घुड़सवार नजर आया जो बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा था।

बौखलाया हुआ वह राणा के सामने उतरा और बोला, "महाराज..." उसका गला रुंधने लगा। खंखारकर बोला, "दुश्मन फिर से आ पहुंचे..."

"कोई बात नहीं!" राणा लाचारी से हंसे, "भीतर जाकर रानियों से कहो, खाना पकाना छोड़ें और दूसरी गुफा तक चलने की तैयारियां करें।"

"महाराज, मैं कुछ फल लाया हूं। दुश्मनों की आंख बचाकर

फल तोड़ना भी तो एक समस्या है। जहां भी फलों के पेड़ हैं, दुश्मनों ने अपनी चौकियां बिठा रखी हैं।"

"फल बच्चों को दे दो। वे भूखे हैं।"

"जो आज्ञा।" वह तेजी से कन्दरा की ओर बढ़ गया।

राणा ने लौटकर अमरसिंह से कहा, "बेटा, इस बार आस-पास कहीं डेरा डालने की बजाय जितनी दूर हो सके, निकल चलो।"

जब इन्होंने भीलों की बस्ती में प्रवेश किया तो रात हो चली थी। अमरसिंह ने एक झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया। भील बाहर निकला। राणा को देखते ही वह पहचान गया। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा ; बोला, "मेरे अहोभाग्य, जो आप मेरे मेहमान बने। आइए, स्वागत है!"

झोपड़ी के पीछे झुरमुट की ओट में घोड़े बांध दिए गए। भील ने झटपट कड़ाह में दूध गर्म किया और सबको एक-एक कटोरा दिया। पीकर दम में दम आया। उसके बाद भोजन की तैयारियां की गईं।

"जानते हो भाई, हमने आज पांच बार भोजन बनाया, लेकिन एक बार भी न खा सके—भागना पड़ गया।" राणा हंसे।

"मातृभूमि के लिए आपका त्याग अनोखा है!" भील ने विभोर होकर कहा।

"नहीं भाई, मातृभूमि के लिए तो लोग न जाने क्या-क्या कर डालते हैं। मैं तो बहुत पीछे हूं..."

भील ने उत्तर दिया, "सूरज को सूरज कहने की जरूरत नहीं होती, अन्नदाता, उसे सभी जानते हैं।"

खाना खाकर सभी ने थोड़ा आराम करना चाहा। महाराणा प्रताप भी एक कोने में बैठ कुछ सोच रहे थे कि अमरसिंह ने भीतर प्रवेश किया। अचानक उसकी पगड़ी नीची छत के एक

बांस से अटककर खुल गई। उसे पिता की उपस्थिति का ध्यान न रहा और वह बोल गया, "जब तक अकबर जैसे बादशाह का विरोध करना है, ऊंची छत वाले महलों के दर्शन थोड़े ही होंगे।"

"अमर!" राणा उत्तेजित होकर उठ खड़े हुए। बस, एक ही शब्द! शर्म से मुंह छुपाकर अमरसिंह दूसरे कमरे में चला गया।

राणा रातभर करवटें बदलते रहे—अमरसिंह···मेरा बेटा अमर···उसे ऊंचे छत वाले महल चाहिए···देव एकलिंग! क्या यही दिन देखने के लिए तूने मुझे जिन्दा रखा?

दूसरे दिन की सुबह राणा को बहुत उदासी लगी। आकाश लाल हुआ और उसके बाद पहाड़ियों की चोटियां सोने से नहाने लगीं, पर राणा के दुःखी मन में जैसे गर्म रेत का तूफान उठ रहा था। जिस अमर को वह अपने-जैसा ही त्यागी और वीर समझते थे, उसके मन में महलों का विचार आया ही क्यों? मेरे बाद मेवाड़ का भार उसी के कन्धों पर आने वाला है, क्या वह आजादी की मशाल में अपना खून जलाता रह पाएगा। कहीं वह भी मुगल बादशाह के चरणों में झुककर गिड़गिड़ाने न लगे—मुझे अपना सामन्त बना लो···मेरा राज्य ले लो और मुझे महल दे दो, गद्देदार पलंग और दास-दासियां···

प्रताप ने होंठ काटे।

सुबह ही राणा वहां से भी रवाना हो गए। भोल रोकना चाहता था, लेकिन आसपास मंडराते शत्रुओं के कारण उसका आग्रह मानना सम्भव नहीं था।

अमरसिंह पिता से झेंपता हुआ अपना घोड़ा अलग-अलग ले चल रहा था। प्रताप ने यह देखा तो स्वयं उसके करीब आए और बोले, "हर व्यक्ति में कमजोरियां होती हैं। उनके लिए

झेंपना नहीं चाहिए बल्कि उन्हें दूर करना चाहिए।"

"जी···" अमरसिंह केवल इतना कह सका।

कई दिन बाद एक अंधेरी सूनी गुफा में पड़ाव डाला गया था।

अमरसिंह राणा प्रताप के पास आया, "पिताजी, आज भोजन के लिए कुछ नहीं है। हमारे सैनिक घास की रोटियां पकाने जा रहे हैं। हम भी आज घास की ही रोटियां खा लें, क्या हर्ज है!"

राणा की आंखें भर आईं।

कन्दरा से दो बच्चे खेलते हुए बाहर आए। इनके शरीर पर मांस कहां है? एक-एक हड्डी गिनी जा सकती है। आंखें गढ़ों में उतर गई हैं। देखा तक नहीं जाता इनकी ओर; डर लगता है—कहीं चलते-चलते गिर न पड़ें!

राणा का मन विद्रोह कर उठा। उन्होंने मुंह हथेलियों में छिपा लिया—मुझे क्या हक है इन सबको कष्ट देने का? मैं मरूं या जिऊं, जो चाहे करूं, लेकिन मेरे कारण ही सब क्यों भूखे रहें? क्यों अधनंगे रहें?

"क्या सोच रहे हैं, पिताजी?"

"ओह···कुछ नहीं, कुछ नहीं। तुम क्या कह रहे थे? घास की रोटियां बनाओगे? जरूर बनाओ, मैं भी खाऊंगा। ठहरो, मैं भी घास चुनने साथ चलता हूं।"

"नहीं पिताजी, आप रुकिए।"

लेकिन राणा न माने।

थोड़ी ही दूर पर कुछ अच्छी किस्म की घास का मैदान था। सभी वहां पहुंचे और घास चुनने लगे। कुछ ही देर में उनकी उंगलियां दर्द करने लगीं, लेकिन पेट की आग तो बढ़ती ही जा रही थी···

कन्दरा के भीतर रोटियां पक रही थीं। प्रताप कपार पर हाथ रखकर एक पत्थर पर बैठे थे। अचानक वह चौंके। उन्होंने सिर उठाकर देखा, उनकी नन्हीं-सी बिटिया रो रही थी।

"क्या बात है बेटी ?"

"मेली लोती बिल्ली ले गई।" बिटिया ने रोते हुए एक ओर इशारा किया। एक बिल्ली मुंह में रोटी दबाए भागी जा रही थी। प्रताप की आंखें छलके आईं। महलों की राजकुमारी एक रोटी के लिए—घास की बनी एक रोटी के लिए इस तरह रो रही थी ! उसकी मां झल्ला पड़ी, "चुप रह, निगोड़ी चुप रह !"

"गाली क्यों देती हो रानी ? उसका क्या अपराध है ?"

"अपराध जिसका है, उसे मैं कैसे गाली दूं ?" रानी ने निर्दयता से कहा।

प्रताप ने रोती बच्ची को गोद में भर लिया, "हां, अपराध मेरा है। मेरे ही कारण सबकी यह दशा हुई। चलो, मैं तुम्हें यह अधिकार देता हूं, जितनी चाहो, गालियां दे लो। लेकिन इस फूल-सी बच्ची को—"

पूरी बात सुने बिना ही रानी उठकर दूसरी ओर चली गई। प्रताप के दो गर्म आंसू बिटिया के कन्धे पर ढलके।

सारी रात जागते हुए बिता देना राणा के लिए नई बात नहीं थी, लेकिन आज तो मन की पीड़ा सीमा पार कर रही थी। उन्हें अपना ही वाक्य याद आया, 'हर व्यक्ति में कमजोरियां होती हैं...'

ऐसी ही एक कमजोरी आज उभर रही थी उनके मन में—बादशाह अकबर से सन्धि कर ली जाए ! तब यों मारे-मारे फिरने की आवश्यकता न होगी। रानियों को रहने-सोने के लिए ढंग की जगह मिलेगी। उनके मुंह से कड़वे वचन न निकलेंगे। फूल-

से कोमल बच्चे···उफ ! इन बेकसूरों को तो आराम मिलेगा।

कन्दरा के बाहर तूफान सूं-सूं कर रहा था। कई बार हवा से उड़कर सूखे पत्ते भीतर आ जाते और खड़खड़ की आवाज करने लगते।

प्रताप उठे। उन्होंने सेवक को जगाया और गम्भीर होकर कहा, "तुम्हें दिल्ली जाना है—अभी !"

"दिल्ली ?" सेवक को अचरज हुआ, क्यों, महाराज ?"

"बादशाह अकबर के नाम एक सन्देश लेकर !" राणा का गला थरथरा रहा था।

"नहीं ! यह नहीं हो सकता !" राय पृथ्वीराज उत्तेजना से बोल उठा।

"हो कैसे नहीं सकता ?" बादशाह अकबर मुस्करा पड़ा, "राणा प्रताप ने खुद हाथ से खत लिखा है। भरोसा न हो तो देख लीजिए।"

राय पृथ्वीराज ने बादशाह से खत लिया। उसे अपनी आंखों पर विश्वास न हो सका।

'नहीं, यह नहीं हो सकता !" वह फिर बुदबुदाया। उसके हाथों में राणा प्रताप का खत कांप रहा था। उसे समझते देर न लगी कि राणा ने सन्धि का यह प्रस्ताव किन्हीं कमजोर क्षणों में ही लिखा है। वह अकबर के सामने अदब से झुका और बोला, "मैं एक अर्ज करना चाहता हूं।"

"कहिए !"

"आप मुझे राणा के नाम खत लिखने की इजाजत दीजिए।

मैं उनसे पुछवाना चाहता हूं कि क्या सचमुच जो उन्होंने लिखा है, ठीक है ?"

"आप चाहते हैं तो शौक से पुछवाइए ! इसकी जरूरत मैं नहीं समझता।"

"लेकिन मैं समझता हूं !"

राय पृथ्वीराज उन दिनों के बहुत अच्छे कवियों में गिना जाता था। वह बीकानेर के राय कल्याणमल का छोटा बेटा था। बीकानेर की अधीनता स्वीकार करने के बाद उसे बादशाह अकबर की सभा में रहना पड़ता था। वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी कविता में कितनी ताकत है। उसे पूरी विश्वास था कि वह राणा प्रताप की कमजोरी को दूर कर सकेगा, उनमें नया जोश भर सकेगा। उसने राणा के नाम संदेश भिजवा दिया :

"पातल जो पतसाह, बोले मुख हूंता बयण।
"मिहर पछम दिस मांह, उगै कासप राववत ॥
"पटकूं मूंछा पाण, कै पटकूं निज तन करद।
"दीजे लिख दीवान, इण दो महली बात इक ॥"

(जिस तरह मैं विश्वास नहीं कर सकता कि सूर्य पश्चिम से निकलता है, उसी तरह मैं इस पर भी विश्वास नहीं कर सकता कि राणा प्रताप बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार कर सकते हैं। अतः हे दीवान, बताओ, सचाई क्या है ? मुझे अपनी तलवार से अपनी ही गर्दन काट लेनी चाहिए या गर्व से मस्तक उठाकर रखना चाहिए ?)

जब राय पृथ्वीराज का दूत महाराणा प्रताप से मिला, तो उनकी दयनीय दशा और दयनीय हो चली थी, लेकिन राय पृथ्वीराज का सन्देश पढ़ते ही उनकी भुजाएं फड़क उठीं। जिस प्रकार अंगारे पर राख की पर्त चढ़ जाती है, लेकिन जरा-सा

फूंकते ही वह फिर से दहक उठता है, इसी प्रकार राणा की कमजोरी दूर हो गई और वह सिंह की तरह हुंकार उठे। तुरन्त उन्होंने राय पृथ्वीराज को उत्तर लिखवाया :

"तुरक कहासी मुख पर्तौ, इण तनसूं इकलिंग।
"ऊगै जांहि ऊगसी, प्राची बीच पतंग॥
"खुसी हूंत पीथल कमध, पटको मूंछां पाण।
"पछटन है जेतै पतौ, कलमा सिर केवाण॥
"सांग मूंड साहसी सको, समजस जहर सवाद।
"झड़ पीथल जीतो भलां, वैण तुरक सूं वाद॥"

(मैं देव एकलिंग की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि अकबर के लिए मेरे मुंह से 'तुर्क' शब्द ही निकलेगा। सूर्य जहां से उदित होता है, वहीं से होगा। आप अपना मस्तक गर्व से उठाए रख सकते हैं क्योंकि प्रताप की तलवार हर समय मुगलों के सिर पर झूलती रहेगी। यदि अकबर की प्रसिद्धि को मैंने सहन कर लिया तो यह राणा सांगा के खून की लाज डुबोने वाली बात होगी। राय पृथ्वीराज, शब्दों के इस युद्ध में आपकी जीत हुई है, किसी को इस पर सन्देह नहीं हो सकता!)

राणा प्रताप ने आंखें सिकोड़ीं। सामने यह कौन घुड़सवार आ रहा है? चेहरा तो जाना-पहचाना-सा मालूम पड़ता है!

दोपहर! धूप की कौंध से बचने के लिए प्रताप ने आंखों पर हथेलियों की छाया की गर्म हवा का झोंका आया, उनके सूखे बाल उड़े। घुड़सवार दौड़कर उनके पांवों पर झुक गया।

उनका चेहरा खुशी से चमक उठा। अरे, यह तो भामाशाह

है । मारवाड़ का प्रसिद्ध व्यापारी भामाशाह ! भामाशाह को गले से लिपटाते हुए वह बोले, "भामा ! आप यहां कैसे ?"

"बताता हूं, अन्नदाता, पहले पानी तो पिलाइए !

राणा ने कटुता से कहा, "पानी तो पिला दूंगा, पर खाना मत मांगिएगा। नहीं है।"

मानो नाटक कर रहा हो, यों भामाशाह ने नाक पर उंगली रखी और आंखें तरेरीं, "शो···ई···चुप रहिए, घड़ी खम्मा, वरना उल्टे पांव लौट जाऊंगा ।"

पानी पीकर भामाशाह पास ही चट्टान पर बैठ रहा, फिर गम्भीरता से बोला, "आपकी एक चीज मेरे पास है । मैं उसे लौटाने आया हूं ।।"

"मेरी चीज ?" राणा को अचरज हुआ, आपके पास ? नहीं तो !"

आप भूल गए होंगे, पर मुझे याद है।"

"कौन-सी चीज भाई ?"

भामाशाह उठ बैठा और कुछ देर तक चुपचाप राणा की ओर देखता रहा, "पहले वादा करिए कि आप उसे ग्रहण करेंगे, वापस नहीं करेंगे।"

"अगर चीज मेरी हुई तो क्यों वापस करूंगा ?" राणा मुस्कराए । वह समझ न पा रहे थे कि भामाशाह इतना गम्भीर क्यों है।

"तब सुनिए, मेरा सारा धन आपका ही दिया हुआ है। उसे वापस लीजिए। मरने से पहले मैं यह कर्ज उतारना चाहता हूं।"

"क्या कहते हैं आप ? भला आपका धन मेरा कैसे हुआ है ?"

"मैंने सारा धन मेवाड़ से व्यापार करके ही तो कमाया है ! मेवाड़ आपका है, धन भी अपका हुआ न ? ओह, कैसे दुर्गम पहाड़ियों में आप बसते हैं ! खोजते-खोजते मेरा तो दम निकल

गया । दो-एक भीलों से पूछा तो गुप्तचर समझकर मेरी जान लेने पर तुल गए । हां तो बताइए, आपका धन कहां, कैसे और कब पहुंचाया जाय ?"

"लेकिन भामाशाह···"

"लेकिन-वेकिन मैं नहीं जानता, अन्नदाता ! आप मेरे··· क्षमा कीजिए···अपने धन से नई सेना का संगठन करिए, हथियार बनवाएं और मेवाड़ से मुगलों को बाहर करिए ।"

राणा की आंखें भर आईं । कितने दिनों के बाद आज सच्ची खुशी के आंसू छलके थे !

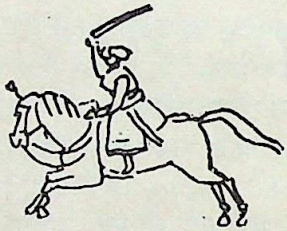

१२
दीपक बुझ गया

झालोर, जोधपुर इडार, नोडोल, बूंदी तथा अन्य स्थानों में सहसा विद्रोह की आग भड़क उठी । राणा प्रताप के दूत बड़ी तेजी से इस आग को और दूर-दूर तक फैला रहे थे ।

अभी तक प्रताप का बसेरा पहाड़ियों में था, जहां राजपूत टोलियों में भामाशाह का धन नया जोश भर रहा था । हथियारों की अब कमी नहीं थी और साहस का देवता राजपूतों पर पहले से ही कृपालु था ।

मानसिंह के क्रोध से कांपते हाथों में अकबर का पत्र हिल रहा था, जिसे अभी-अभी दूत ने उसे दिया था । अकबर ने इस बार साफ लिख दिया था कि मानसिंह ने जान-बूझकर राजपूतों का विद्रोह दबाने में पूरी जिम्मेदारी से काम नहीं लिया है ।

"आप शाहजादा सलीम के साथ हमसे जल्द मिलिए। अब हम मेवाड़ का दौरा खुद करना चाहते हैं। इसके लिए पहले हम अजमेर में कुछ दिन रुकेंगे। आप दोनों हमसे वहीं मिलें।"

सन्देश की ये पंक्तियां मानसिंह की आंखों के सामने बार-बार घूम जातीं और वह चहलक़दमी करता हुआ होंठ काटता।

मुगल सेना का भार दूसरें सेनापतियों को सौंपकर सलीम व मानसिंह अजमेर की ओर रवाना हुए और कुछ ही दिनों में मेवाड़ धधक उठा।

इधर राणा प्रताप की चमचमाती तसवार की कौंध से मुगल सैनिकों की आंखें अंधी होने लगीं। "जय मेवाड़ ! जय एकलिंग !" के नारों के साथ राजपूत गोगुन्दा पर टूटे और उसे अधिकार में कर लिया। घुड़सवार राजपूत आंधी की तरह उदयपुर की ओर टूट पड़े। किले के बन्द दरवाजे बन्द न रह सके। आजादी की लपटों ने उनकी कुण्डियां पिघला दीं।

"भून डालो !" राणा की हुंकार आकाश तक गूंज उठी।

उदयपुर भी अब राणा के कब्जे में था मेवाड़ का अधिकांश भाग अचानक मुगलों के हाथ से निकल गया। इतने बड़े विद्रोह की तैयारियां इतनी गुप्त रीति से की गई थीं कि अकबर दंग रह गया।

"मैं सरोही से आया हूं।" एक दूत ने राणा के सामने सादर अभिवादन करके कहा।

"सरोही ?" महाराणा आगे को झुके, "वहां दो सामन्तों का अधिकार था न ?"

"जी हां महाराज," दूत बोला, "एक सामन्त राव सुरतान और दूसरे आपके भाई जगमल।"

"वहां के विशेष समाचार ?"

"सरोही ने अकबर के खिलाफ विद्रोह कर दिया है।"

"अच्छा ?' राणा की आंखें चमकीं, "क्या हमारा भाई भी विद्रोह में शामिल है ?"

दूत नीचे देखने लगा।

"क्या बात है ? तुम चुप क्यों हो गए ?"

"अभयदान मिले अन्नदाता ..."

"हां-हां कहो ! हमने वचन दिया।"

"आपके भाई ने विद्रोह में राव सुरतान का साथ न दिया। उनमें युद्ध हुआ। आपके भाई उसमें काम आए।"

प्रताप एक क्षण चुप रहे, फिर मुस्कराए, "देशद्रोही की मृत्य का कभी शोक नहीं मनाया जाता।"

"महाराज, राव सुरतान ने यही सूचना देने व क्षमायाचना के लिए मुझे आपके पास भेजा है।"

"जब उन्होंने अपराध ही नहीं किया तो क्षमायाचना कैसी ?" राणा मृदुता से बोले, "उनसे कहिएगा कि जगमल जैसे कायर भाई की मृत्यु के समाचार से हमें कोई दुःख नहीं हुआ है। मेवाड़ और सरोही दोनों विद्रोही हैं। इस नाते हम दोनों भाई हुए।"

१९ जनवरी, १५९७।

राणा प्रताप पिछले कई दिनों से बीमार थे। आज तो उनकी हालत बहुत ज्यादा बिगड़ गई थी। वह ५७ साल के हो चुके थे। अमरसिंह को पास बुलाकर उन्होंने कहा, "बेटे, अब मुझे लगता है मेरे महाप्रयाण का दिन आ गया है।"

"ऐसा न कहिए, पिताजी !" अमरसिंह की आवाज रुंध गई।